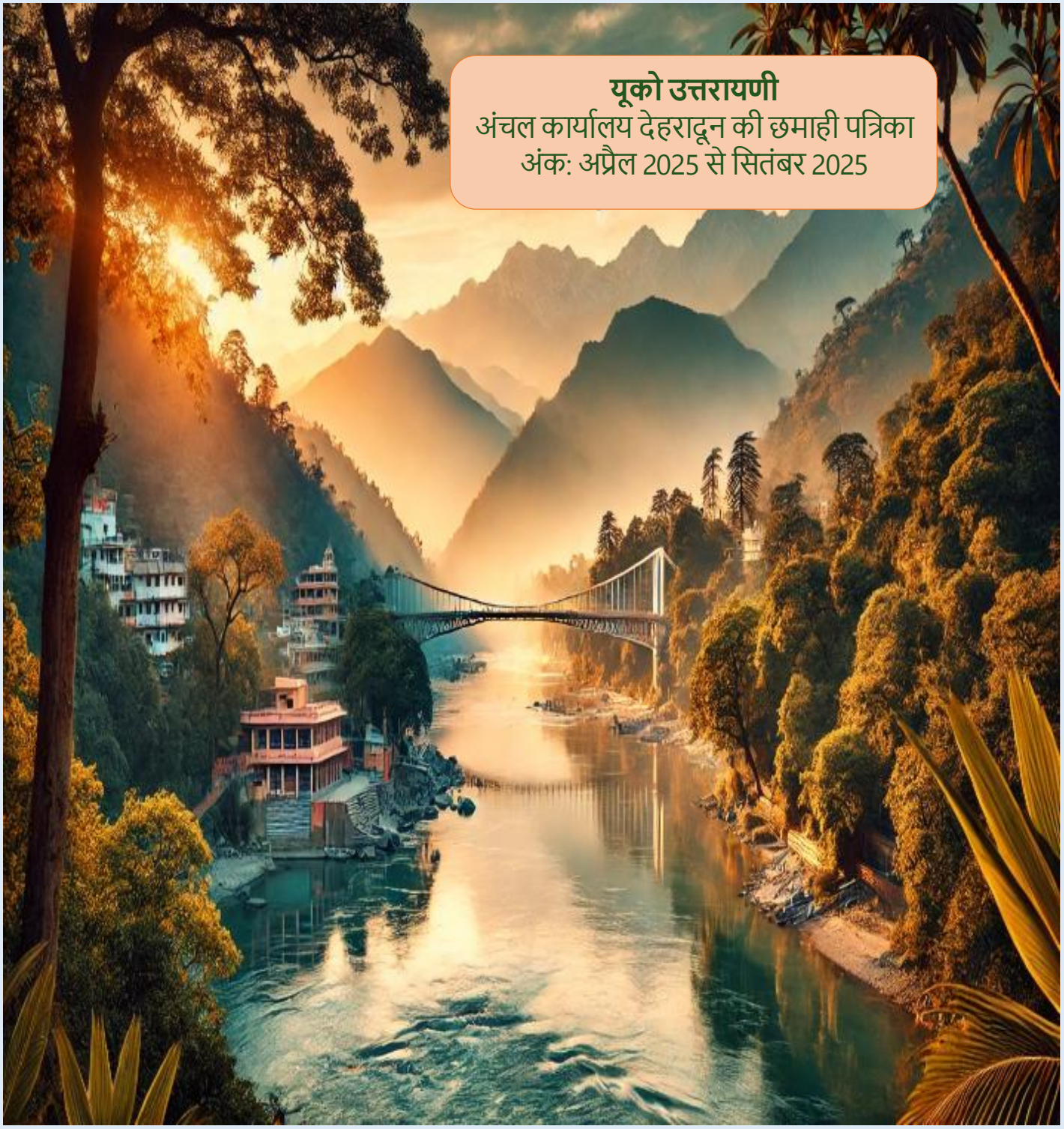

यूको उत्तरायणी

अंचल कार्यालय देहरादून की छमाही पत्रिका

अंक: अप्रैल 2025 से सितंबर 2025

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

अंचल कार्यालय में पदस्थापित श्री अरुण कांत (वरिष्ठ प्रबंधक) की सुपुत्री सुश्री अवंशिका नेगी द्वारा बनाई चित्रकला

यूको उत्तरायणी
अंचल कार्यालय देहरादून की
छमाही पत्रिका
अंक: अप्रैल **2025** से सितंबर **2025**

संरक्षक
श्री रणधीर कुमार
सहायक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

प्रेरणा
श्रीअमिष नाथ झा
मुख्य प्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

दिग्दर्शन

श्रीमती तृप्ति कुमारी
मुख्य प्रबंधक
श्री अरुण कुमार
मुख्य प्रबंधक
श्री आलोक कुमार
मुख्य प्रबंधक
श्री खेम सिंह
मुख्य प्रबंधक

संपादक
श्रीमती ममता देवी
प्रबंधक राजभाषा

संपादकीय पता
यूको बैंक अंचल कार्यालय (राजभाषा विभाग)
प्लॉट नंबर 5,आईटी पार्क,सहस्त्रधारा रोड़,देहरादून उत्तराखंड248001

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ
केंद्रीय गृह मंत्री जी का संदेश	4
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	6
अंचल प्रमुख का संदेश	7
उप अंचल प्रमुख का संदेश	8
संपादकीय	9
डिजिटल दुनिया में मानवता की खोज: तकनीक, संबंध और संवेदनशीलता का संगम	10
विदेशों में हिंदी: एक भाषा की सीमाओं से परे यात्रा	13
एक प्याली सुकून वाली	17
बस आगे बढ़ती जाऊँगी	19
क्या आपको भी हिंदी में कार्य करना कठिन लगता है?	20
पी. ओ. की दुनिया: सपनों से संघर्ष का सफर	22
छोटी सी माया और गुम हुई मानवता	23
कार्तिक स्वामी मंदिर: आस्था और रोमांच का संगम	26
देवभूमि का खेल महाकुंभ: 38वें राष्ट्रीय खेल – एक स्वर्णिम अध्याय	32
वक़्त की ख़ामोशी	41
आँवला रसम बनाने की विधि	42

इस अंक में प्रकाशित विचार संबंधित लेखकों के निजी विचार हैं, यूको बैंक की इन विचारों से सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा** बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय पाठकगण,

सादर नमस्कार।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय देहरादून की छमाही पत्रिका "यूको उत्तरायणी" के इस नवीन अंक के प्रकाशन पर मैं समस्त यूको परिवार तथा हमारे सम्मानित पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका केवल जानकारी का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों, अनुभवों और उपलब्धियों का मंच है, जो हम सभी को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य करती है।

हमारा बैंक अपने स्थापना काल से ही देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विशेष रूप से उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य में बैंकिंग सेवाओं का विस्तार करना हमारे लिए गर्व की बात है। ग्रामीण क्षेत्रों, दूरस्थ पहाड़ियों और सीमांत इलाकों में बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराना हमारे मिशन का अहम हिस्सा है। हमारी शाखाएँ किसानों, छोटे व्यापारियों, महिलाओं, युवाओं तथा वंचित वर्गों को वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आज देश तेजी से डिजिटल बैंकिंग की ओर अग्रसर है। ग्राहक चाहते हैं कि बैंक उनकी जरूरतों को तुरंत और सरल तरीके से पूरा करे। इस दिशा में यूको बैंक ने अनेक सेवाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए बैंकिंग को अधिक सुरक्षित और सुलभ बनाया है। मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, एटीएम सुविधाएँ, इंटरनेट बैंकिंग और आधार-आधारित लेनदेन ने ग्राहकों की सुविधा में अनेक गुना वृद्धि की है। हमारा लक्ष्य है कि ग्राहक जहाँ हों, बैंकिंग वहीं उपलब्ध हो।

हम यह भी मानते हैं कि बैंक केवल आर्थिक संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा परिवार है। वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा सहयोग तथा सामाजिक कार्यों में भागीदारी के माध्यम से यूको बैंक समाज के विकास में निरंतर योगदान देता रहा है।

हमारे कर्मचारी हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनकी कार्यनिष्ठा, ईमानदारी और सेवा भावना के कारण ही हम ग्राहकों के विश्वास पर लगातार खरे उतर रहे हैं। मैं सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने चुनौतियों के बावजूद भी बैंक के उद्देश्यों को सर्वोपरि रखते हुए उत्कृष्ट कार्य किया है।यूको उत्तरायणी के इस अंक के प्रकाशन में हमारे कर्मचारियों ने सहयोग दिया है।

अंत में, मैं आशा करता हूँ कि यूको उत्तरायणी का यह संस्करण ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और उपयोगी सिद्ध होगा। आप सभी का सहयोग, सुझाव और विश्वास इसी प्रकार मिलता रहे, यही हमारी कामना है।

रणधीर कुमार
अंचल प्रमुख, यूको बैंक
अंचल कार्यालय देहरादून

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय पाठकगण,

सादर अभिवादन।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय देहरादून द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका "यूको उत्तरायणी" के इस नए अंक के प्रकाशन पर मैं दिल से शुभकामनाएँ देता हूँ । यह पत्रिका हमारे सभी कर्मचारियों, ग्राहकों तथा हितधारकों को एक साथ जोड़ने वाला महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से न केवल बैंक की उपलब्धियाँ और प्रगति साझा होती है, बल्कि हमारे विचार, अनुभव और सुझाव भी एक-दूसरे तक पहुँचते हैं।

यूको बैंक ने सदैव जन-जन तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने का संकल्प लिया है। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज का हर वर्ग आर्थिक रूप से सशक्त बने और विकास की मुख्यधारा से जुड़े। देहरादून अंचल की सभी शाखाएँ इसी भावना के साथ कार्य कर रही हैं।

डिजिटल युग में ग्राहकों की आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ लगातार बदल रही हैं। उनके समय की बचत और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए, हम बैंकिंग सेवाओं को अधिक तकनीकी और सुविधाजनक बनाते जा रहे हैं। मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई सेवाएँ, एटीएम नेटवर्क तथा इंटरनेट बैंकिंग जैसी आधुनिक सुविधाएँ आज बैंक को ग्राहक की हथेली तक पहुँचा रही हैं। हमारा प्रयास है कि ग्राहक जहाँ हों, बैंकिंग वहीं उनके साथ हो।

कृषि क्षेत्र, छोटे-मझोले उद्योग, स्वरोज़गार और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में हमारी शाखाएँ निरंतर सराहनीय योगदान दे रही हैं। उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य में युवाओं और महिलाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। हमें गर्व है कि यूको बैंक इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

हम सामाजिक दायित्वों को भी गंभीरता से निभाते हैं। वित्तीय साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण, आपदा सहायता तथा सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों में हमारा सहयोग निरंतर जारी है। हम मानते हैं कि बैंक तभी सफल है जब समाज भी प्रगति करे और खुशहाल बने।

मैं इस अवसर पर हमारे सभी कर्मचारियों के परिश्रम और समर्पण की सराहना करता हूँ। उनकी टीम भावना, मेहनत और सकारात्मक सोच के कारण ही हमारी शाखाएँ ग्राहकों के विश्वास पर खरा उतर रही हैं।

प्रिय ग्राहकों, आपका विश्वास ही हमारी प्रेरणा और शक्ति है। हम सदैव आपकी आवश्यकताओं, सुझावों और अपेक्षाओं का सम्मान करते हैं। आने वाले समय में हम और भी उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने तथा बैंक को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यूको उत्तरायणी का यह अंक ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा। आप सभी अपना सहयोग और विश्वास इसी प्रकार बनाए रखें—इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

अमिष नाथ झा
उप अंचल प्रमुख, यूको बैंक
अंचल कार्यालय देहरादून

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

आज अत्यंत हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है कि हम 'यूको उत्तरायणी' का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका मात्र पन्नों का संकलन नहीं है, बल्कि हमारे अंचल कार्यालय देहरादून के सभी साथियों के परिश्रम, सृजनात्मकता और सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब है। उत्तराखंड की इस पावन धरा पर, जहाँ प्रकृति और संस्कृति का अद्‌भुत संगम है, वहाँ यूको बैंक न केवल एक वित्तीय संस्थान के रूप में खड़ा है, बल्कि जन-जन के विश्वास का प्रतीक भी बना हुआ है।

इस पत्रिका का नाम 'उत्तरायणी' रखने के पीछे एक गहरा अर्थ और संदेश निहित है। भारतीय संस्कृति और खगोल विज्ञान में 'उत्तरायण' उस कालखंड को कहते हैं जब सूर्य उत्तर दिशा की ओर गमन करता है। यह अंधकार से प्रकाश की ओर, जड़ता से चेतना की ओर और नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ने का प्रतीक है।उत्तराखंड की संस्कृति में 'उत्तरायणी' का विशेष महत्व है। जिस प्रकार उत्तरायण में दिन बड़े होने लगते हैं और प्रकाश की अवधि बढ़ती है, उसी प्रकार 'यूको उत्तरायणी' का उद्देश्य भी हमारे ज्ञान, कार्यक्षमता और बैंक के प्रति हमारी निष्ठा के प्रकाश को विस्तृत करना है। 'उत्तरायणी' हमारे लिए 'ऊर्ध्वगमन' (ऊपर की ओर बढ़ना) का संदेश है। यह हमें याद दिलाती है कि लक्ष्य चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, यदि हमारी दिशा सही है और संकल्प अडिग है, तो सफलता सुनिश्चित है।

वर्तमान समय में बैंकिंग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। हम 'डिजिटल बैंकिंग' और 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के युग में प्रवेश कर चुके हैं। आज का ग्राहक केवल वित्तीय लेनदेन नहीं चाहता, बल्कि वह एक सुगम, सुरक्षित और त्वरित अनुभव की अपेक्षा करता है। यूको बैंक, अपनी 'सम्मान आपके विश्वास का' (Honours Your Trust) की परंपरा को निभाते हुए, तकनीक और संवेदना के बीच एक सेतु का कार्य कर रहा है।उत्तराखंड जैसे भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में हमारी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। दुर्गम पहाड़ियों से लेकर तराई के मैदानों तक, हमारे कर्मचारी जिस कर्मठता से बैंकिंग सेवाएँ पहुँचा रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। 'यूको उत्तरायणी' के माध्यम से हम उन सभी प्रयासों को रेखांकित करना चाहते हैं जो अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ रहे हैं।

'यूको उत्तरायणी' का यह अंक हमारी रचनात्मक ऊर्जा का उत्सव है। बैंकिंग की व्यस्त दिनचर्या के बीच, हमारे साथियों के भीतर एक कवि, एक लेखक और एक विचारक भी जीवित है। इस पत्रिका में संकलित लेख, कविताएँ और संस्मरण यह दर्शाते हैं कि हम मशीनी नहीं, बल्कि भावनाओं से ओत-प्रोत इंसान हैं। साहित्य और कला हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतनी ही आवश्यक हैं, जितनी कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए कसरत। जब एक बैंकर अपनी कलम उठाता है, तो वह अपने अनुभवों को शब्दों में पिरोकर आने वाली पीढ़ी के लिए एक मार्गदर्शन छोड़ जाता है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी साथियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से उन लेखकों का, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचार साझा किए।अंत में, मैं बस इतना ही कहना चाहूँगी कि 'उत्तरायणी' का मार्ग अनुशासन और धैर्य की मांग करता है। आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम अपने बैंक को नई ऊँचाइयों पर ले जाएँगे। जिस प्रकार सूर्य की किरणें बिना किसी भेदभाव के सबको प्रकाशित करती हैं, वैसे ही हमारी सेवाएँ भी समाज के हर वर्ग तक पहुँचें।

शुभकामनाओं सहित,

प्रबंधक राजभाषा
अंचल कार्यालय देहरादून

“डिजिटल दुनिया में मानवता की खोज: तकनीक, संबंध और संवेदनशीलता का संगम”

21वीं सदी को अगर किसी एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो वह होगा – डिजिटल। आज हमारी दुनिया स्क्रीन, ऐप्स, सॉफ्टवेयर, और सोशल मीडिया से जुड़ी हुई है। तकनीक ने जहाँ एक ओर जीवन को आसान बनाया है, वहीं दूसरी ओर यह कई सवाल भी खड़े कर रही है – क्या हम दुनिया के अपरिचित लोगों के साथ पहले से अधिक जुड़ गए हैं या अपनों की भीड़ में और भी अधिक अकेले हो गए हैं? क्या तकनीक ने इंसान को इंसान के और करीब किया है या दूर कर दिया है? क्या हम मशीनों की दुनिया में अपनी संवेदनाएं खोते जा रहे हैं? या यह सिर्फ कोई भ्रम है या सपना, जो सच के सामने आते ही या फिर नींद खुलते ही स्पष्ट हो जाएगा।

यहाँ पर हम आधुनिक डिजिटल युग के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे – इसके फायदे, नुकसान, हमारे संबंधों पर इसका प्रभाव, और आखिर में यह जानने की कोशिश करेंगे कि क्या इस बदलती दुनिया में हम अब भी अपने भीतर की मानवता को बचाकर रख पा रहे हैं?

डिजिटल युग की शुरुआत और इसका प्रभाव

तकनीक ने सबसे बड़ा बदलाव तब लाया जब इंटरनेट और स्मार्टफोन आम लोगों की जिंदगी में आए। पहले लोग रेडियो सुनते थे, पत्र लिखते थे और अख़बार पढ़ते थे, एक दूसरे से मिलने का समय तय करते थे फिर मिलकर बैठकर आपस में सुख दुख सांझा करते थे। अब हम सब कुछ मोबाइल में देखते, सुनते और पढ़ते हैं, आपने सामने

बैठकर मिलने की जगह विडियो कॉल के जरिए ही मिल लेते हैं। मानवीय स्पर्श और सवेदनाएँ खत्म होती जा रही है। विद्यालय और कक्षाएँ अब ऑनलाइन हो गए हैं ।ऑफिस के काम अब घर से होने लगे हैं ।ख़रीदारी से लेकर डॉक्टर तक सब मोबाइल में आ ही आ गए हैं। और इन सब से इंसान की जिंदगी काफी आसान भी हो गई है। इन सबके चलते ज़िंदगी पहले से तेज़ हो गई है लेकिन क्या यह तेज़ी हर किसी के लिए फायदेमंद है?

संबंधों में बदलाव

पहले जब घर में चिट्ठियाँ आती थीं तो सारा परिवार साथ बैठकर उसको पढ़ता था, चिट्ठी भेजने वाला जवाब का कितने ही दिन इंतज़ार करता था। जब टेलीफोन की घंटी बजती थी तब पड़ोसी के घर जाकरअपनों से बात हुआ करती थी और कोई भी त्योहार होता था तब पड़ोस के घरों के साथ बैठकर खाना खाने की परंपरा थी। लेकिन अब चिट्ठी नहीं आती उसके जवाब का इंतज़ार नहीं रहता। सब अपने-अपने मोबाइल में खोए रहते हैं। दोस्तों से चैटिंग तो होती है, लेकिन मुलाकातें कम हो गई हैं।दादी-नानी की कहानियों की जगह अब यूट्यूब वीडियो, इंस्टा की रील्स ने ले ली है।
इस बदलाव ने रिश्तों में एक अलग तरह की दूरी ला दी है – डिजिटल दूरी।

सोशल मीडिया: जुड़ाव या दिखावा?

सोशल मीडिया आज के समय का सबसे प्रभावशाली प्लेटफॉर्म है। हम फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, ट्विटर पर दिन भर एक्टिव रहते हैं।लोग अपनी खुशियाँ, दुख, ग़म, कामयाबी सब कुछ पोस्ट करते हैं। लेकिन क्या यह सब असली है?क्या हम वाकई खुश हैं या बस दिखाने के लिए खुश नज़र आते हैं? सोशल मीडिया पर दिन भर कुछ न कुछ चला ही रहता है जो हमारा सारा समय ले रहा है। कुछ वर्षों से सोशल मीडिया की लत हर आयु वर्ग के लोगों में बहुत बुरी तरह से बढ़ती जा रही है।
आज इंसान की असली मुस्कान की जगह "इमोजी" ने ले ली है।

तकनीक के फायदे

बेशक तकनीक ने हमें कई सुविधाएँ दी हैं। पढ़ाई के लिए यूट्यूब, गूगल और ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध है, आपको खाना बनाने की नई विधियाँ सिखनी हो या गाड़ी का टायर बदलना सीखना हो, आप सब कुछ ऑनलाइन सीख सकते हो।नौकरी ढूंढने के लिए अनेकों वेबसाइट्स मौजूद हैं।किसानों को मौसम और खेती की जानकारी आसानी से मोबाइल से मिल जाती है। छोटे व्यापारी भी अब डिजिटल पेमेंट ले रहे हैं और खुल्ले पैसे यानि फुटकर की चिंता समाप्त हो गई है ।सैनिक जो अपने घर परिवार से सिर्फ चिट्ठी के जरिए मिलते थे अब मन मुताबिक समय बात कर सकते हैं।
इससे विकास की रफ्तार बढ़ी है और इसने आम आदमी को सशक्त भी किया है।

तकनीक के नुकसान

जहाँ तकनीकी विकास फायदा है, वहाँ नुकसान भी हैं। सबसे ज्यादा बुरा असर आँखों पर पड़ रहा है और साथ ही दिमाग पर भी । आजकल न जाने कितने ही रील्स उस ही सोशल मीडिया पर वायरल हो रहें हैं जिसके दुष्प्रभाव से हमारी आने वाली पीढ़ी, युवा पीढ़ी और हमारे बुजुर्ग अनेकों गंभीर मानसिक विकृतियों के शिकार हो रहे हैं। बच्चे और युवा आजकल विडियो 2 एक्स गति से देखते हैं यानि जिस विडियो को खत्म होने में आधा घंटा लगनेवाला था वही विडियो 15 मिनट में ही समाप्त। अब इसका बुरा असर है एकाग्रता की कमी। बच्चों का घर से बाहर जाकर खेलन अब तो मानो जैसे खत्म ही हो गया है ।नींद की कमी और तनाव,झूठी खबरें और ऑनलाइन ठगी ना जाने क्या-क्या ।
यह गंभीर समस्या है जो बाहर से देखने पर शायद सामान्य प्रतीत हो किन्तु इसके दूरगामी प्रभाव बहुत ही ज्यादा घटक हैं। सोशल मीडिया का आदी इंसान बहुत ही जल्दी खुश रहना भूल जाता है फिर अपने आप में गुम होकर जल्द ही तनाव का शिकार हो जाते हैं।

नई पीढ़ी और तकनीक

बच्चे अब किताबों से नहीं, स्क्रीन से सीख रहे हैं। उनका दिमाग तेज़ है लेकिन संवेदनाएँ धीमी पड़ रही हैं।हम तकनीक के इतने आदी हो गए हैं कि अब बिना मोबाइल के कुछ देर रहना भी मुश्किल हो गया है। छोटे छोटे बच्चों का खाना शुरू नहीं होता जब तक उनके हाथ में मोबाइल ना आ जाए। यहाँ तक आजकल हमारे देश की आधी

आबादी का पेट तब तक साफ नहीं होता जब तक वो मोबाइल लेकर शौचालय में न जाएँ। बच्चों में ऑनलाइन गेम की लत,सोशल मीडिया का दबाव,लाइक और कमेंट के पीछे भागना, और रील्स बनाना – पढ़ाई से ज़्यादा जरूरी होने लगा है।

ऐसे में बच्चों को डिजिटल संतुलन सिखाना एक समस्या बन गई है।

भावनाओं की भूमिका और तकनीकी जड़ता

एक समय था जब लोग अपने दुख-दर्द बाँटते थे, अब वे उन्हें छुपा लेते हैं और इंस्टाग्राम पर मुस्कराते हैं। तकनीक ने बातचीत को आसान तो किया है, पर भावनाओं को व्यक्त करना जटिल भी बना दिया है। पहले हम अपने दोस्त के साथ पाकर खुलकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करते थे, हँसते थे, और जरूरत पद जाया करती तो रोकर अपना मन हल्का करते थे , पर अब सब मानो रोबोट की तरह व्यवहार करते हैं । मानवीय संवेदनाओं की कमी आ गई है ।रिश्तों में गहराई नहीं है गर्माहट नहीं है , ना ही हकीकत की जमीन पर जुड़ाव रह गया है ।
क्या हम अब भी दिल से सोचते हैं या सिर्फ "डेटा" से?

डिजिटल मानसिकता और आत्म-संवेदनशीलता

अब हर चीज़ का उत्तर गूगल से मिल जाता है, लेकिन खुद से सवाल पूछना भूलते जा रहे हैं।
मैं क्या हूँ?मैं क्या चाहता हूँ?मेरी खुशी किसमें है?इन सवालों को ढूँढना ही आत्म-संवेदनशीलता है। तकनीक के साथ खुद से जुड़ना भी ज़रूरी है।

समाधान: तकनीक का संतुलित उपयोग

हम तकनीक से दूर नहीं हो सकते, लेकिन इसे अपने ऊपर हावी भी नहीं होने देना है । तो हम क्या कर सकते हैं ? आइए जानने का एक प्रयास करते हैं:

डिजिटल डिटॉक्स: सप्ताह में एक दिन मोबाइल से दूरी बनानी होगी ।
परिवार संग समय: मिलकर खाना बनाना,खाना, बात करना।
प्राकृतिक जीवन: पार्क में घूमना, असली फूलों को,प्रकृति को देखना।
मन की बात: सोशल मीडिया से नहीं, बल्कि अपने परिवार एवं दोस्तों से दिल की बात करना।

सीमित स्क्रीन टाइम: खासकर बच्चों के लिए या तो शून्य स्क्रीन टाइम या फिर बिलकुल संतुलित समय निर्धारित करना होगा ।
बच्चों को सहानुभूति, संवेदना और सहकार्य सिखाना होगा।

डिजिटल ज्ञान के साथ सामाजिक ज्ञान ज़रूरी है । स्कूलों में सामाजिक नैतिकता के साथ साथ "डिजिटल नैतिकता" भी पढ़ाई जानी चाहिए।

तकनीक और भविष्य में समाज

भविष्य का समाज कैसा होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम तकनीक का उपयोग किस तरह करते हैं:
क्या हम इंसान रहेंगे या सिर्फ डेटा-बेस्ड मशीन?क्या हम सोचेंगे या केवल टाइप करेंगे?क्या रिश्ते रहेंगे या सिर्फ कनेक्शन?जवाब हमारे हाथ में है।

निष्कर्ष:

तकनीक एक औज़ार है, साधन है – साध्य नहीं। यह हमें सुविधा देती है, लेकिन हमें यह तय करना होगा कि हम इसका उपयोग करें या इसके गुलाम बनें। आधुनिक डिजिटल युग में सबसे बड़ी चुनौती है – मानवता को बचाए रखना।
हम जितना तकनीक से जुड़ें, उतना ही अपने भीतर के इंसान से भी जुड़ें। रिश्तों को निभाएँ, भावनाओं को समझें, और एक बार फिर से "मनुष्य" बनें – संवेदनशील, ज़िंदादिल,सजीव, और सच्चे।
अगली बार मोबाइल उठाने से पहले ज़रा मुस्कराइए और सोचिए – "क्या मैं इंसान से जुड़ने वाला हूँ या सिर्फ एक स्क्रीन से?"

देवेश बिष्ट
वरिष्ठ प्रबन्धक
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग
अंचल कार्यालय देहरादून

विदेशों में हिंदी: एक भाषा की सीमाओं से परे यात्रा

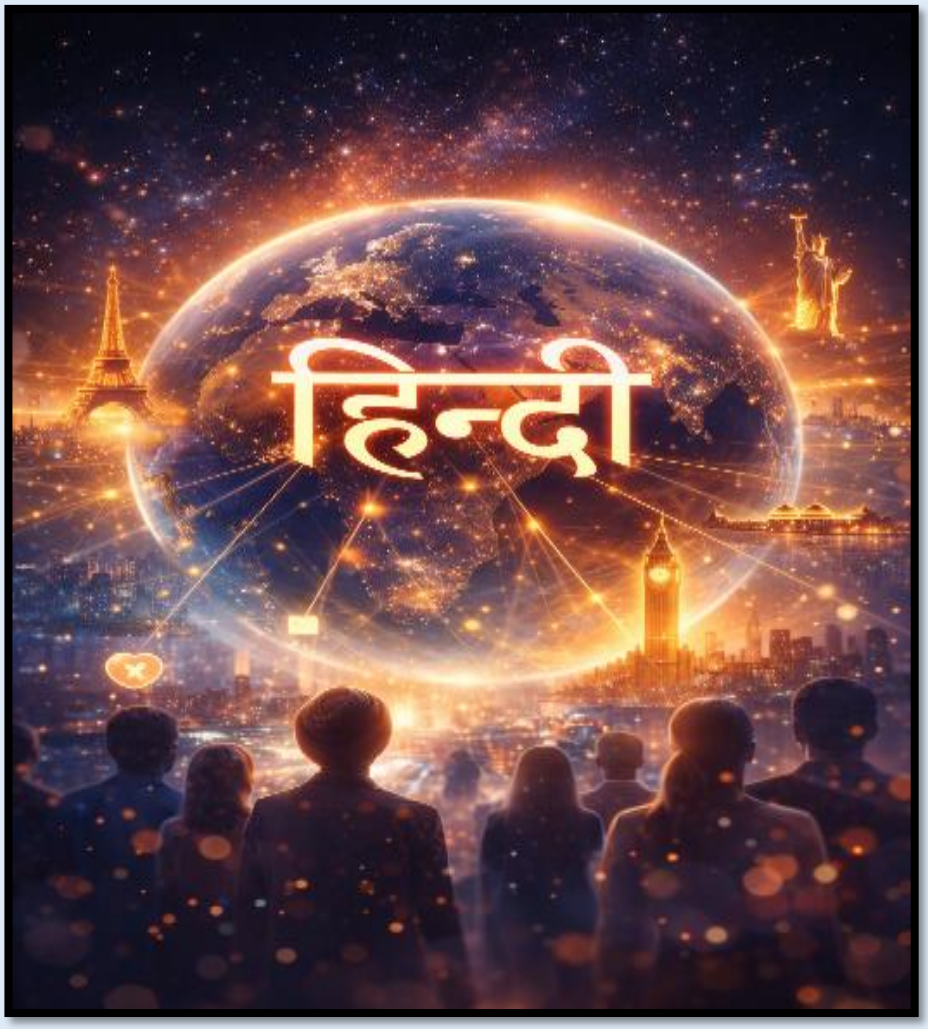

—

हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, यह हमारे इतिहास, संस्कृति, भावनाओं और पहचान का प्रतीक है। भारत की धड़कनों से निकली यह भाषा अब विदेशों की सरज़मीं पर भी अपने पाँव जमा रही है। एक समय था जब हिंदी केवल भारत की सीमाओं तक सीमित थी, पर आज वह विश्व के कोनों में गूंज रही है — चाहे वह न्यूयॉर्क की गलियां हों, मॉरीशस के खेत, लंदन के विश्वविद्यालय या टोक्यो की कक्षाएं।

विदेशों में हिंदी केवल प्रवासी भारतीयों तक सीमित नहीं रही, अब इसे विदेशी नागरिक भी सीख रहे हैं, बोल रहे हैं और इसमें साहित्य रच रहे हैं। इस लेख के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि हिंदी कैसे विदेशों में पहुँची, कैसे वहाँ बसी, किस रूप में विकसित हुई और आज वह किन-किन रूपों में वहां जीवित है।

हिंदी की वैश्विक यात्रा की शुरुआत:

हिंदी भाषा की विदेश यात्रा कोई आधुनिक घटना नहीं है। जब 19वीं सदी में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम जैसे देशों में ले जाया गया, तब वे अपने साथ हिंदी को भी ले गए।

उन मजदूरों के लिए हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं थी, वह उनके दुःख-सुख की साथी थी। उन्होंने भजन,

लोकगीत, कहानियों, और धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से हिंदी को जीवित रखा। धीरे-धीरे यह भाषा वहाँ की संस्कृति का हिस्सा बन गई।

गिरमिटिया हिंदी और लोक जीवन:

"गिरमिटिया" शब्द का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत गहरा है, खासकर भारत और भारतीय प्रवासी इतिहास के संदर्भ में।गिरमिटिया क्या है?गिरमिटिया शब्द अंग्रेज़ी शब्द "Agreement" से निकला है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में जब ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत से मजदूरों को अपने उपनिवेशों जैसे फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम आदि में काम करने के लिए भेजा, तब इन मजदूरों से एक अनुबंध (agreement) पर हस्ताक्षर करवाया जाता था। ये अनुबंध अंग्रेज़ी में होता था, जिसे भारतीय मजदूर "गिरमिट" कहने लगे, और इस अनुबंध पर काम करने वाले मजदूरों को "गिरमिटिया" कहा गया।

गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति, ये मजदूर अक्सर गरीब, अशिक्षित और ग्रामीण क्षेत्रों से होते थे।उन्हें खेती, खासकर गन्ने की खेती में काम करने के लिए ले जाया जाता था।अनुबंध की शर्तें कठोर थीं और उन्हें गुलामी जैसी स्थिति में रखा जाता था।कई बार उन्हें धोखे से या जबरन ले जाया जाता था।

साहित्य और गिरमिटिया

महात्मा गांधी स्वयं 1893 में दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिया मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने गए थे।
भोजपुरी और हिंदी साहित्य में गिरमिटिया जीवन पर कई रचनाएँ मिलती हैं। "कलिकाल", "गिरमिटिया", और "गिरमिटिया जीवन की कहानियाँ" जैसे उपन्यास और कविताएँ इस विषय को उजागर करती हैं।

मॉरीशस में आज भी बहुत से लोग 'भोजपुरी' या 'मॉरीशस हिंदी' बोलते हैं, जो भारतीय हिंदी से थोड़ी भिन्न है, लेकिन उसकी जड़ें वही हैं। वहाँ के लोग तुलसीदास की 'रामचरितमानस' का पाठ करते हैं, हिंदी में कविताएं रचते हैं और हिंदी थिएटर भी करते हैं।

त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम और फिजी जैसे देशों में हिंदी का यह स्वरूप लोकजीवन में रच-बस गया है। इन देशों के रेडियो स्टेशनों पर आज भी हिंदी गाने बजते हैं और त्योहारों पर हिंदी नाटक होते हैं।

आधुनिक समय में हिंदी की बढ़ती प्रतिष्ठा:

आज की दुनिया में हिंदी केवल प्रवासी भारतीयों तक सीमित नहीं रही। अब विदेशों में भी लोग हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में सीखने लगे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस, जापान, दक्षिण कोरिया जैसे देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

यह एक सुखद आश्चर्य है कि जापान जैसे देश में युवा हिंदी गीतों के दीवाने हैं। कई जापानी छात्र केवल इसलिए हिंदी सीखते हैं ताकि वे शाहरुख़ ख़ान या अमिताभ बच्चन की फिल्में मूल भाषा में समझ सकें।

हिंदी और बॉलीवुड:

यदि कोई एक कारक है जिसने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाई है, तो वह है बॉलीवुड। हिंदी फिल्मों ने विदेशों में हिंदी की पहुंच को बहुत तेज़ी से फैलाया है।

खाड़ी देशों में हिंदी फिल्मों का बड़ा बाज़ार है। संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन, ओमान जैसे देशों में हिंदी फिल्मों के प्रशंसकों की कोई कमी नहीं। यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका के अनेक हिस्सों में लोग हिंदी सिनेमा की बदौलत भाषा से परिचित हो रहे हैं।

बॉलीवुड के संवाद, गीत और संवादशैली ने हिंदी को एक "कूल" भाषा बना दिया है — विदेशी युवाओं के लिए भी।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संस्थान और प्रयास:

भारत सरकार ने भी हिंदी को विदेशों में बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए हैं। विश्व हिंदी सम्मेलन, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (ICCR), और भारतीय दूतावासों के ज़रिए हिंदी के प्रचार-प्रसार की अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय (मॉरीशस), भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (लंदन, पेरिस, मास्को, आदि), और प्रवासी भारतीय केंद्र जैसे संस्थान इस काम में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

विदेशों में हिंदी शिक्षण:

संयुक्त राज्य अमेरिका में "South Asian Studies" जैसे विषयों के अंतर्गत हिंदी पढ़ाई जाती है। हार्वर्ड, येल, और यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य पर शोध होते हैं।

इसी तरह इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज, रूस की मास्को यूनिवर्सिटी, जापान के ओसाका विश्वविद्यालय, और कोरिया के सियोल विश्वविद्यालय में भी हिंदी के विभाग हैं।

ऑनलाइन माध्यमों जैसे यूट्यूब, Duo lingo, HindiPod101 आदि के कारण भी दुनिया भर में लोग हिंदी सीखने लगे हैं।

प्रवासी साहित्य और हिंदी रचनात्मकता:

हिंदी अब केवल भारत की भाषा नहीं रही — वह अब एक "विश्व भाषा" बन चुकी है। विदेशों में रहने वाले प्रवासी लेखकों ने हिंदी में रचनाएं लिखकर इसकी साहित्यिक समृद्धि में अपना योगदान दिया है।

डॉ. रामदेव मिश्र (फिजी), विश्वनाथ त्रिपाठी (मॉरीशस), हरिशंकर आदेश (कनाडा), तेजिंदर शर्मा (इंग्लैंड), और राजमोहन गांधी जैसे अनेक लेखक हैं जिन्होंने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की स्थिति:

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने की माँग लंबे समय से उठती रही है। यद्यपि अभी यह संभव नहीं हुआ है, लेकिन यूएन की वेबसाइट पर हिंदी अनुवाद उपलब्ध है।

इसी तरह बीबीसी हिंदी, डबल्यूडी हिंदी, वॉइस ऑफ अमेरिका हिंदी, जैसे अनेक अंतरराष्ट्रीय समाचार संस्थान हिंदी में खबरें प्रसारित करते हैं। यह हिंदी की वैश्विक प्रतिष्ठा का संकेत है।

हिंदी के सामने चुनौतियाँ:

विदेशों में हिंदी की यह यात्रा आसान नहीं रही है। कई देशों में नई पीढ़ी हिंदी से दूर होती जा रही है। अंग्रेजी, फ्रेंच, डच, स्पैनिश जैसी भाषाओं का प्रभाव अधिक है।प्रवासी भारतीयों के बच्चों को हिंदी सिखाना एक चुनौती बनता जा रहा है। कई बार माता-पिता भी घर में अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषा में बात करते हैं, जिससे हिंदी धीरे-धीरे कमज़ोर होती जाती है।

तकनीक और हिंदी:

तकनीक के इस युग में भी हिंदी ने अपने लिए रास्ता बना लिया है। आज गूगल ट्रांसलेट में हिंदी मौजूद है। चैट - जीपीटी जैसी एआई तकनीकें हिंदी में संवाद कर सकती हैं। गूगल असिस्टेंट, एलेक्सा, सिरी जैसे वर्चुअल असिस्टेंट्स अब हिंदी समझते और बोलते हैं। भाषिणी एप्प, अनुवादिनी तथा कंठस्थ जैसे सॉफ्टवेर की मदद से कार्यालयों में कार्य हिंदी में करना बहुत सरल हो गया है।इससे हिंदी न समझने वालों खासकर विदेशियों के लिए,इससे हिंदी सीखना और भी आसान हो गया है।

हिंदी और भारत की सॉफ्ट पावर:

हिंदी अब भारत की "सॉफ्ट पावर" बन चुकी है। सॉफ्ट पावर का मतलब होता है बिना दबाव के, अपनी संस्कृति और मूल्यों से दुनिया को प्रभावित करना। हिंदी के माध्यम से भारत अपने साहित्य, योग, आयुर्वेद, दर्शन और जीवनदर्शन को दुनिया में पहुंचा रहा है।

भविष्य की संभावनाएं:

भविष्य में हिंदी की स्थिति और मज़बूत हो सकती है — यदि हम इसके प्रचार-प्रसार के प्रयासों को बढ़ाते रहें। विदेशों में बसे भारतीयों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को हिंदी सिखाएं, हिंदी में सोचने और रचने को प्रेरित करें।सरकार और निजी संस्थानों को भी हिंदी पाठ्यक्रमों, वर्चुअल कक्षाओं और डिजिटल संसाधनों को विश्व स्तर पर सरल और सुलभ बनाना चाहिए।

निष्कर्ष:

हिंदी एक भाव है, एक अनुभव है। यह केवल शब्दों की भाषा नहीं — यह संवेदनाओं, परंपराओं और संबंधों की भाषा है।जब कोई विदेशी "नमस्ते" कहता है, जब जापान की कोई छात्रा "आप कैसे हैं?" पूछती है, जब अमेरिका में कोई बच्चा "मैं खाना खा चुका हूँ" बोलता है — तब हमें समझना चाहिए कि हिंदी अब सीमाओं में नहीं बंधी।

विदेशों में हिंदी अब एक बीज की तरह है — जो कई देशों में अंकुरित हो चुका है, और कई जगहों पर मिट्टी को बस तलाश रहा है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस भाषा को केवल बोलें नहीं, हम इसे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएँ , ताकि वह आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचे, चाहे वे भारत में हों या विदेशों में।

हिंदी की यह यात्रा थमती नहीं — यह बहती है, जैसे कोई नदी, जो हर देश, हर दिल को छूती है।

अमिष नाथ झा
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय

एक प्याली सुकून वाली

बात उन दिनों की है जब मैंने एसडबल्यूओए के पद पर हमारे बैंक की शाखा में जॉइन किया था और मैं भीतर से काफी डरी हुई किन्तु बाहर से काफी आत्मविश्वास से भरी हुई दिखाई देती थी। बात उन दिनों की है जब ब्रांच में "सैक कर दीजिए न सर" की आवाज़ सुनाई दिया करती थी और मैं बड़ी हैरानी से अपने वरिष्ठ अधिकारियों को देखा करती थी और सोचा करती थी कि कैसी भाषा का उपयोग कर रहे हैं ये लोग। या जब शाम के समय हैड कैशियर के इशारे के बाद "टीवी चला दीजिए ना सर" की आवाज गूँजती थी तो मैं पूरे शाखा परिसर को बड़ी उत्सुकता के साथ निहारती थी और सोचा करती थी कि कौन सा चेनल चलेगा? और जब कोई टीवी नहीं चलता था तब मन ही मन सोचती थी कि ये लोग टीवी क्यूँ नहीं चला रहे हैं। यानि उस समय मैं बहुत भोली पर उत्सुक कर्मचारी थी।

फिर उसके बाद प्रशिक्षण के दौरान हमें सिखाया गया कि ग्राहक सेवा बहुत महत्वपूर्ण है और ग्राहक को जितनी जल्दी अच्छी सेवा दी जाए ग्राहक उतना ही प्रसन्न रहते हैं। ग्राहकों को सेवा में देरी का दुष्प्रभाव बैंक को ग्राहक शिकायतों के रूप में भुगतना पड़ता है। बात दिमाग में बैठा ली किसी ग्राहक को सेवा में देरी नहीं की जाएगी। प्रशिक्षण से लौट कर शाखा में सभी को बताया कि क्या क्या सीखा है।

मेरी शाखा ऐसी जगह थी जहां पर जब किसी बस के आने पर ग्राहकों की भीड़ उमड़ती थी तो उसी बस के लौटने

पर भीड़ को भी लौट जाने की हमेशा जल्दी होती थी, और हमने भी यह लक्ष्य बनाया था किसी भी ग्राहक की बस छूटने नहीं दी जाएगी। इसलिए नकदी खाते में जमा करना हो , खाते से पैसा निकालना हो , पासबुक प्रिंट करना हो, खाता खोलना हो, एफ़डी बनाना हो या कोई भी अन्य काम, हम फटाफट से सम्पन्न कर समय से ग्राहक को फ़ारिग कर देते थे। ऐसी ही ग्राहक सेवा के चलते हम अक्सर बुजुर्ग ग्राहकों को भी जल्दी- जल्दी फ़ारिक कर देते थे । एक दिन एक बुजुर्ग ग्राहक अपनी बेटी के साथ शाखा में आए उनकी पासबुक प्रिंट करते समय प्रिंटर में कोई खराबी आ गई और अच्छे बच्चे होने के नाते मैंने उनसे आग्रह किया कि जब तक प्रिंटर ठीक होता है वो आएँ और आकर मेरे पास बैठें। वो आए और मेरे पास बैठकर मुझसे बात करने लगे। बातों बातों में उन्होने बताया कि कैसे जब यह शाखा खुली थी तो उन्होने अन्य लोगों के साथ मिलकर इस शाखा को बढ़ने में मदद की थी और पुराने शाखा प्रबंधक के साथ बैठ कर वो शाखा में चाय पिया करते थे और बातें किया करते थे। उन्होनें शिकायत भरे स्वर में कहा " आजकल के बच्चे तो बस फटाफट से काम कर देते हैं और हमसे अपना पीछा छुड़ा लेते है।" क्यूंकी वो पहले भी अपनी बेटी के साथ शाखा में आ चुके थे और हमने उनका काम तब भी झटपट कर दिया था और बस के लौटने तक उनको बैंक के बाहर की एक दुकान में ही इंतज़ार करना पड़ा था।

उन्होने जब ऐसा कहा तो मुझे लगा अरे एक प्याली चाय की ही तो बात है। मैंने झट से कहा " अरे अंकल जी!इसमें क्या है? हम अभी आपको चाय पिलाते हैं। तो उन्होनें मना किया "अरे! नहीं बेटा । बस का समय हो चला हैं, आज नहीं । पर दरवाजे के पास से बोले " एक दिन तुम्हारे साथ चाय जरूर पीऊँगा।" मैंने कहा हमे इंतज़ार रहेगा अंकल।

उनके जाने के बाद मेंने ये बात अपने शाखा प्रमुख को बताई तो उन्होने भी बताया कि "अंकल की बात तो एकदम सही है। पुराने लोगों के ग्राहकों के गहरे रिश्तों का एक राज़ यह भी है कि वे अपने ग्राहकों के साथ पारिवारिक रिश्ते रखते थे और चाय से बेहतर भला क्या ही अवसर है जब लोग अपने मन की बात सांझा करते हैं।"

तो हम सब ने तय किया आज के बाद सभी ग्राहकों को चाय भी पिलाई जाएगी और साथ ही चाहे दो मिनट कि हो पर बात अवश्य की जाएगी। और इस तरह से "चाय पिलाओ अभियान" शुरू हो गया और शुरू हो गया उन अंकल के आने का इंतजार। तकरीबन दो महीने तक वो नहीं आए और मेरी बैचेनी बढ़ती रही, मैं उनको बताना चाहती थी कि आज कल के बच्चे भी परवाह करते हैं। और एक दिन इंतज़ार खत्म हुआ, मैंने उनको बस से उतरते हुए जैसे ही देखा, में लगभग भाग कर गई और अपने शाखा प्रमुख को उनके आने के बारे में बताया। और मौका कुछ ऐसा मिला कि कोई अन्य ग्राहक उस समय आया ही नहीं। फिर तो शाखा प्रमुख के केबिन में ही सारे स्टाफ ने उनके साथ बैठकर चाय पी, खूब सारी चर्चा हुई, गीले शिकवे दूर हुए और उस दिन वो पूरी तरह से तृप्त होकर अपनी बेटी के साथ हमारी शाखा से बाहर गए। उस दिन मुझे भी समझ आया कि बैंक के वरिष्ठ अधिकारी भी मेरी ही तरह थे उन सभी को अंकल के साथ आत्मीयता से बात करते देख मुझे बहुत खुशी हुई और मेरे मन में सबके लिए आदर का भाव बढ़ गया।

इसी तरह सिलसिला चलता रहा और महीने बीतते गए। एक दिन सिर्फ उनकी बेटी आई और मैंने पूछा "अब अंकल कब आ रहे हैं चाय पीने?" उनकी बेटी ने आँखों में आँसू भरकर कहा " अब वो कभी नहीं आ सकते, उनको कैंसर था और पिछले माह उनकी मृत्यु हो गई।" यह सुनकर मैं सन्न रह गई। सभी को एक झटका सा लगा। उस पल मुझे एहसास हुआ कि उस दिन बात एक प्याली चाय से काफी बढ़कर थी। मेरी सारी ज़िंदगी एक काश बनकर गुजर सकती थी और उनको अंतिम समय में दिए गए सम्मान से और उनके दिए आशीर्वाद से हम सब वंचित रह सकते थे। उस दिन हमने उन्हें सिर्फ चाय नहीं बल्कि अपने जीवन भर के लिए सुकून देने वाली एक प्याली पिलाई थी।

ममता देवी
प्रबंधक राजभाषा

बस आगे बढ़ती जाऊँगी

मैं स्त्री हूँ,
बस आगे बढ़ती जाऊँगी , मैं अपनी एक अलग पहचान बनाऊँगी ।
बेटी, बहन, पत्नी और माँ,
अनेकों है किरदार मेरे,
हर किरदार को पूर्ण समर्पण और निष्ठा से निभाऊँगी।
मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।

मत तोलना मुझे बेटा बेटी के तराजू में , न रह जाए कोख तक ही जान मेरी।
न घोंटना मेरे सपनों का गला, न चढ़ाना मुझे आदर्शों की बलि ।
बेटी हूँ तो क्या ? सिर्फ बोझ ही ना कहलाऊँगी,
समय पड़ने पर बेटों के भी कर्तव्य निभाऊँगी।
हाँ, मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।

बंदिशे हैं लाखों मुझ पर, मेरे लिए ही तो नियम बने,
जो नहीं कर सके तुम, मैं तो वह भी कर जाऊँगी।
गर हटा दो तुम ये नियम कायदे , तो तुम से बेहतर कर जाऊँगी।
हाँ, मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।

रिश्तों के इस चक्रव्यूह में माना अभी फंसी हूँ ,
पैरों में जंजीरे लिए जिद पर भी अड़ी हूँ।
मात्र कैदी बनकर अब ना रह पाऊँगी , अपने आंसुओं के सैलाब यूंही न बहाऊँगी,
निभा लूँगी अपना स्त्री धर्म और खुद के लिए भी जी जाऊँगी।
हाँ, मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।
मैं हूँ सृष्टि निर्मात्री, मैं सावित्री , मैं गायत्री,
मेरे प्रेम, वात्सल्य और करुणा को मेरी कमजोरी मत समझना ।
इन्ही को मैं अपनी ताकत अपना जुनून बनाऊँगी।
मेरे जैसी ना जाने कितनी है , कर्तव्यों में उलझी ,रिश्तों से बंधी, सपनों के पंख लगाने को आतुर,
आगे बढ़कर शायद मैं उनकी प्रेरणा बन पाऊँगी।

हाँ, मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।
हाँ, मैं स्त्री हूँ, बस आगे बढ़ती जाऊँगी।

सीमा बौड़ाई
प्रबंधक
रिटेल हब

क्या आपको भी हिंदी में कार्य करना कठिन लगता है?

क्या आपको भी कार्यालय के कार्य हिंदी में करने में कठिनाई महसूस होती है? यदि आपको जवाब हाँ है तो यह लेख आपके लिए ही है। बेशक, हम में से हर कोई हिंदी बोलने में, पढ़ने में सहज महसूस करता है। हिंदी गाने सुनना, गुनगुनाना, हिंदी पत्रिकाएँ पढ़ना आसान लगता है। किंतु जब कोई पत्र हिंदी में भेजना है, फ़ाइल में कोई कार्य करना है, हिंदी में प्राप्त ई मेल का उत्तर हिंदी में देना है या फिर अपनी तरफ से हिंदी में किसी कार्य को आगे बढ़ाना है तो दफ्तर में कार्य करना बेहद मुश्किल लगता है। आज हम में से यदि किसी को यह कठिनाई आ रही है तो मैं इसका बहुत ही व्यवहारिक उत्तर यहाँ दे रही हूँ।

पहली समस्या आती है कि मेरे सिस्टम पर हिंदी का सॉफ्टवेयर ही नहीं है, फिर मेरे सिस्टम से हिंदी सॉफ्टवेयर, सिस्टम अपडेट होने के बाद कहीं गायब हो जाता है। जो कि अपने आप में एक समस्या है। इसी समस्या के समाधान के बार में आपको अलग अलग सुविधाओं के विषय में अवगत करना चाहती हूँ। आइए एक एक कर डोमैन में उपलब्ध इन सुविधाओं को समझते हैं।

कोपायलेट : कोपायलेट ई मेल में उपलब्ध एक सुविधा है जो कि ई मेल के नाम के ठीक नीचे हल्के गुलाबी और नीले पीले रंग में उपलब्ध है। इस पर क्लिक करके बहुत ही आसानी से एक मैसेज बॉक्स खुलता है। इस एआई से हम आसानी से अनेकों कार्य करा सकते हें। कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपको सिर्फ अँग्रेजी या किसी भी भाषा में बने अपने कंटेन्ट को यहाँ पेस्ट करना है और साथ ही उस कंटेन्ट को हिन्दी में अनुवाद करने हेतु निर्देश टाइप करना है। पलक झपकते ही आपका सारा कंटेन्ट सरल हिन्दी में उपलब्ध हो जाएगा। अब आप को हिंदी में अनुवादित अपने संदेश को कॉपी करना है और ई मेल, माइक्रोसॉफ़्ट वर्ड या फिर जहाँ भी आपको यह चाहिए वहाँ पेस्ट कर देना है। देखा कितना आसान है।

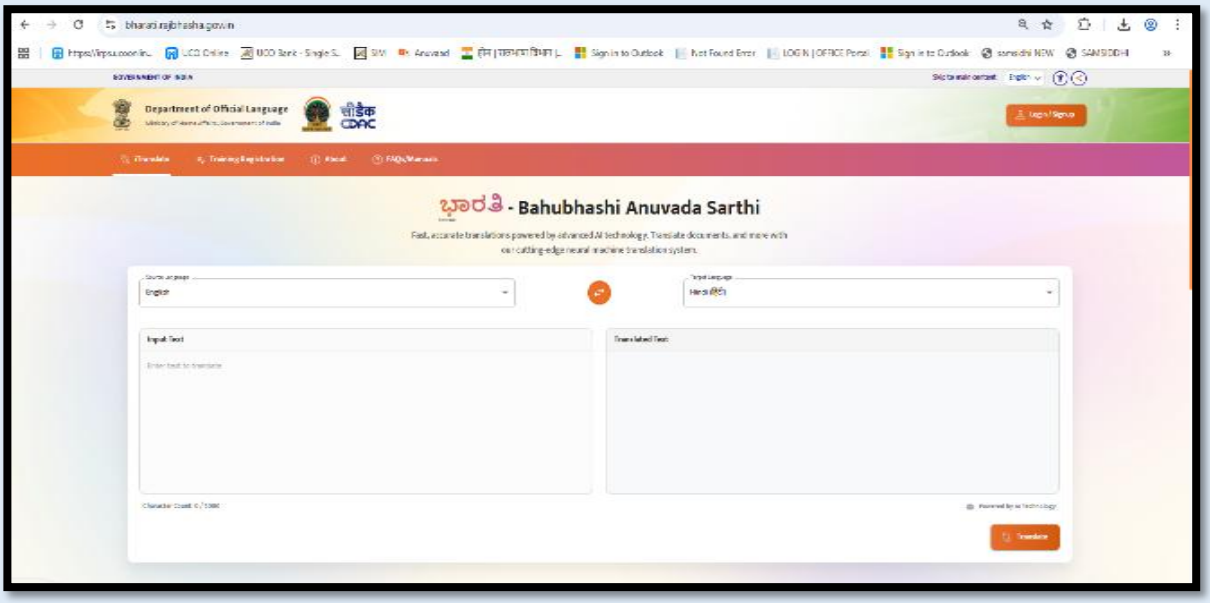

कंठस्थ : दूसरा आसान टूल है कंठस्थ जिसे कि हम सबकी सुविधा हेतु प्रधान कार्यालय के प्रयासों से डोमेन में उपलब्ध कराया गया है। आप https://kanthasth.rajbhasha.gov.in क्लिक करके आसानी से इस साइट को चला सकते हैं। जैसे ही आप इस लिंक पर क्लिक करते हैं तो आपको सबसे पहले सोर्स लेंगवेज़ को चुनना है इसके बाद आपको लक्षित भाषा /टार्गेट लेंगवेज़ को हिंदी चुनना है। यदि आपको 1000 शब्द से कम किसी संदेश को अनुवाद करना है तो यहाँ आप को इनपुट टेक्स्ट खंड में अपने कंटेन्ट को पेस्ट/टाइप करना है, उसके बाद दिए गए ट्रांसलेट बटन पर क्लिक करना है और ट्रांसलेटिड खंड में आपको आपके संदेश का हिंदी अनुवाद उपलब्ध हो जाएगा। यह तो बात रही 1000 से नीचे वाले संदेश की, यदि आपको एमएस वर्ड में तैयार आपके पूरे पत्र का हिंदी अनुवाद चाहिए तो आपको ऊपर दिए लिंक पर क्लिक करना

है और उसके बाद आपको साइन इन के विकल्प को चुनना है। उसके पश्चात आपको क्रिएट अकाउंट वाले विकल्प का चयन करना है उसके बाद मांगी गई जानकारी भरने के पश्चात अपनी आईडी बना लेनी है और अपनी आईडी तथा पासवर्ड को याद रख लेना है। भविष्य में जब भी आपको हिंदी में अनुवाद चाहिए तो ऊपर दिए लिंक पर क्लिक कर के आप लॉगिन कर लें, जिस भी वर्ड फ़ाइल का आपको हिंदी में अनुवाद करना है उसको डेस्कटॉप में सेव कर लीजिए। इसके बाद कंठस्थ में जाकर आई-ट्रांसलेट (i-translate) के विकल्प को चुन लें। फिर choose file पर क्लिक करें और वर्डफ़ाइल का चयन करें। अब Download translated file पर क्लिक करें, थोड़ी ही देर में आप पाएंगे कि अनुवादित फ़ाइल आपके download फोल्डर में सुरक्षित हो गई।

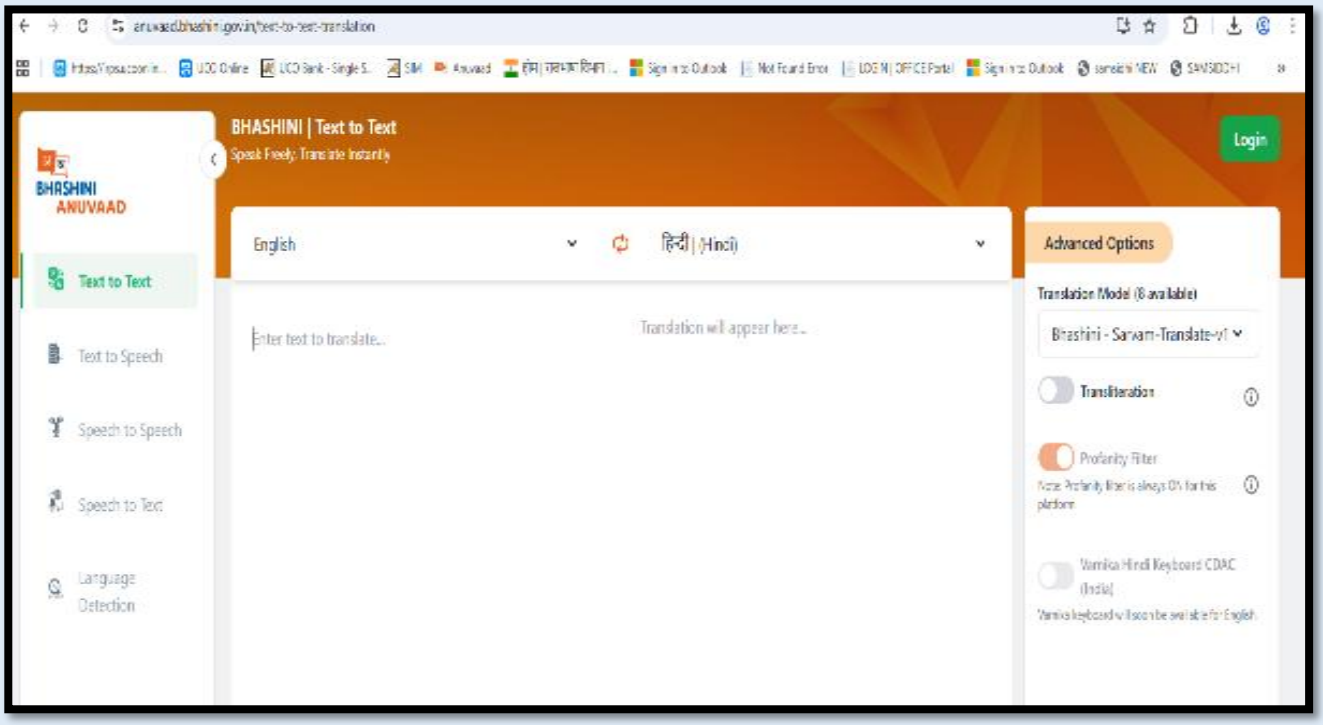

भाषिणी: एक अन्य टूल जो हम सभी की सुविधा के लिए डोमैन में उपलब्ध है वह है भाषिणी। इसके लिए https://anuvaad.bhashini.gov.in लिंक पर क्लिक करें। लिंक खुलते ही हो स्क्रीन दिखाई देगी उसमें select source language पर क्लिक करें और ड्रॉपडाउन मेनू से उस भाषा का चयन करें जिस भाषा का आपको अनुवाद करना है। उसके पश्चात select target language पर क्लिक करें और ड्रॉपडाउन मेनू से हिंदी भाषा का चयन करें। अब search models पर क्लिक करे और स्क्रॉलडाउन करते हुए दिए गए 9 में से किसी एक मॉडल का चयन करें। मेरा अपना मत है कि आप Bhashini –Sarvam-Translate – V1 मॉडल का चयन करें। मैंने अधिकतर मामलों में इस मॉडल का अनुवाद ज्यादा बेहतर पाया गया है। अब enter text to translate में टाइप करके या फिर पेस्ट कर आप अपना संदेश दर्ज करें आप पाएंगे कि हिंदी अनुवाद साथ साथ ही साथ वाले कॉलम में उपलब्ध हो जाएगा, अनुवादित संदेश को कॉपी करें और जहाँ कहीं भी इसी आवश्यकता हो उसको पेस्ट कर लीजिए।

पी. ओ. की दुनिया: सपनों से संघर्ष का सफर

जब आया पत्र नियुक्ति का, आँखों में थे सपने हज़ार,
माँ-बाप की आंखों में चमक, दिल में थी उमंग अपार।
"अब तो मैं सरकारी अफसर हूँ ", ये सोचकर मुस्काया,
सपनों के संग उम्मीदों का, एक नया सवेरा आया।

पहुंचा जब मैं ट्रेनिंग सेंटर, माहौल था बड़ा निराला,
नए दोस्त, नई कहानियाँ, हर पल जैसे एक उजाला।
कभी हँसी तो कभी मस्ती, साथ में था पढ़ाई का भार,
बन गए दिल से अपने वो भी , जो थे कल तक अजनबी यार।

फिर आई पोस्टिंग की घड़ी, शाखा ने खोली अपनी बाँहें,
पर हकीकत की ज़मीन पर, सपनों ने भर ली आहें।
लोन, कैश और टारगेट का, चला दबाव का खेल,
न कोई समय खुद के लिए, न छुट्टी की कोई रेल।

पर उसी शाखा की भीड़ में, कुछ चेहरे थे बड़े खास,
सीनियर जो सिखाते रहे, बने वो जैसे संजीवनी श्वास।
कभी डाँट, कभी मार्गदर्शन, तो कभी हल्की सी हँसी,
उनके अनुभव की छाया में, सीखी हमने ज़िंदगी की खुशी।

थका-हारा फिर पहुँचा मैं , एडवांस ट्रेनिंग कैंप,
जहाँ मिला ज्ञान ऋण का, और थोड़ा सा सुकून का टैम।
वहीं मिला एक हमसफ़र, जो थी शाखा की साथी,
बातें छोटी-छोटी थीं पर, मेरा दिल छू जाए वैसी।

साझे लफ्ज़, साझी मुस्कानें, धीरे-धीरे दिल भर आया,
काम के बीच मोहब्बत ने, चुपचाप अपना घर बसाया।
फिर से बने कुछ नए यार, दिल को थोड़ी राहत मिली,
हमको चलो इस सिस्टम में भी, कुछ खुशियों की सौगात मिली।

ऐसी है पी.ओ. की दुनिया, खट्टी-मीठी सी कहानी,
कभी तनाव, कभी मुस्कानें, और कभी कोई दीवानी।
ये नौकरी बस नौकरी नहीं, जीवन का है एक रंग,
जिसमें कर्तव्य, प्रेम, और संघर्ष हैं अपने संग।

प्रशांत चौहान
परिवीक्षाधीन अधिकारी
पंतनगर शाखा

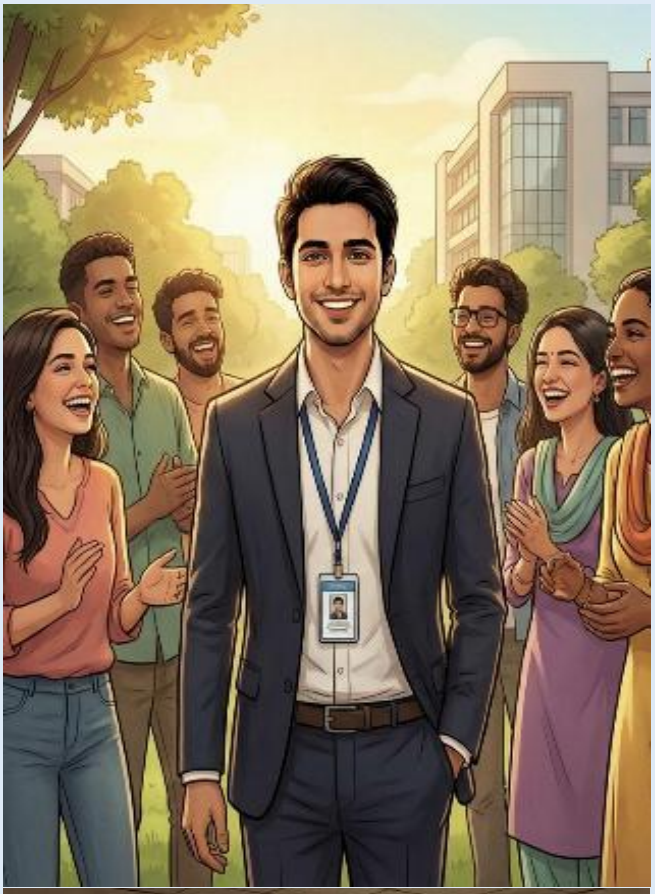

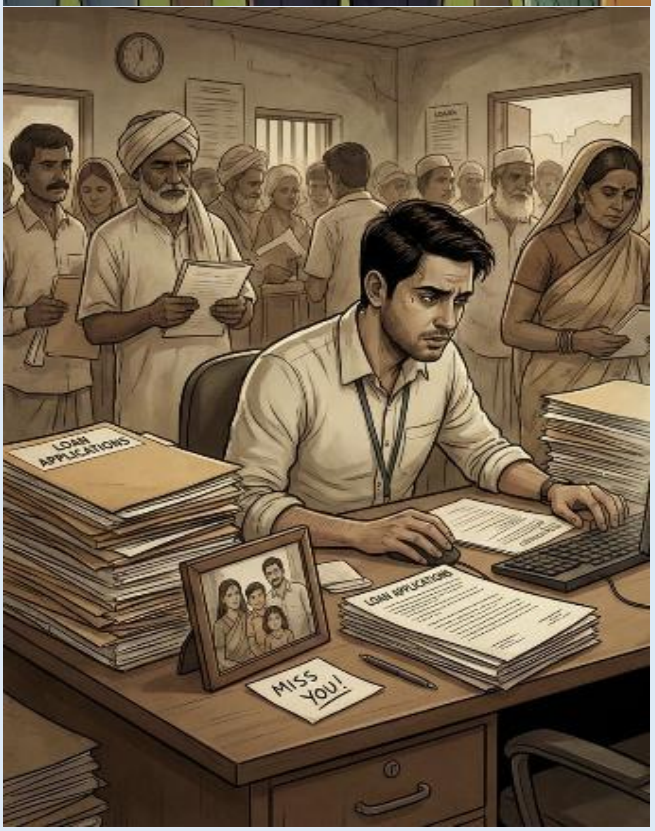

“छोटी सी माया और गुम हुई मानवता”

माया सिर्फ 10 साल की एक छोटी सी बच्ची थी। एक छोटे से पहाड़ी गांव की रहने वाली, जहाँ न बिजली थी, न मोबाइल था और नही टीवी। पर उसके पास थी – माँ की गोद, बाबा की कहानियाँ, खूब सारी भेड़ बकरियाँ, अपने खेत और मिट्टी में खेलती मासूमियत। उसके पापा शहर में काम करते थे और कई महीनों तक घर नहीं लौटते थे।एक दिन खबर आई कि अब माया को माँ और बाबा के साथ शहर जाना होगा – हमेशा के लिए–गाँव में बेहतर शिक्षा की सुविधाएं जो नहीं थी।

“अब तेरा भविष्य वहीं बनेगा,” माँ ने कहा था।

माया को शहर शब्द में कोई अपनेपन की गर्माहट महसूस नहीं हुई पर उसे अपना आँगन, वह टूटी चारपाई, खेत, पशु सब और चिड़ियों की चहचहाहट छोड़नी पड़ी।

शहर ने माया को जैसे चौंका दिया। ऊँची इमारतें, भागती गाड़ियाँ, रोशनी और भीड़ – लेकिन कोई चेहरा मुस्कराता नहीं दिखा। यहाँ किसी के पास किसी दूसरे के लिए वक्त नहीं था।स्टेशन से पहले ही दिन माया माँ का हाथ छोड़कर भीड़ में खो गई।

बच्ची डर गई थी। डरी-सहमी माया स्टेशन के पास ही फुटपाथ पर बैठकर रोने लगी।

लोग गुज़रते रहे...किसी ने देखा, किसी ने नहीं...

कुछ ने फोटो खींची, एक ने वीडियो बनाकर इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर दिया —

और टैग दिया “बीच सड़क पर रोती बच्ची – शेयर जरूर करें!”

पास ही एक चाय की दुकान थी। दुकानदार का नाम था अजीत। वो एक सख्त मिज़ाज का, पर
दिल का साफ आदमी था। उसने रोती हुई माया को देखा।
"बेटी, यहाँ क्यों बैठी है? किसके साथ आई थी?" – उसने पूछा।
माया ने कुछ नहीं कहा। बस डर से रोती रही।
अजीत ने उसे चाय की दुकान के पास एक कोने में बैठाया, एक बिस्किट का पैकेट थमा दिया और बोला, "डर मत। मैं कुछ नहीं करूँगा।"
धीरे-धीरे माया को भरोसा हुआ। वो बोली – "मुझसे माँ का हाथ छुट गया और अब मैं खो गई हूँ। पता नहीं माँ कहाँ हैं और मैं कहाँ हूँ।"
अजीत ने पुलिस को बुलाया। लेकिन पुलिस ने कोई जल्दी नहीं दिखाई गई।
"बच्ची तो ठीक है ना? फिर क्या हड़बड़ी है?" – कांस्टेबल ने कहा।
उधर माया की माँ बेकाबू हो गई थी। स्टेशन पर इधर-उधर भागती, लोगों से पूछती, रोती, हाथ जोड़ती – "मेरी बेटी देखी क्या?"
कुछ लोग अजनबी बनकर गुजरते रहे...कुछ खड़े हुए, पर फिर चलते बने...एक महिला बोली – "ओह... अफसोस है... लेकिन मुझे जल्दी है।" और अपने एयरपॉड लगाकर निकल गई।
इंसानो की भीड़ में इंसानियत कहीं खो गई थी।
और इसी तरह पूरा दिन बीत गया और शाम हो गई।
शाम को अजीत की दुकान पर चाय पीने आया एक लड़का मोबाइल पर देखकर चिल्लाया — "अरे ये वही बच्ची है ना जो इंस्टा पर वायरल हो रही है?"
उसने वीडियो दिखाया जिसमें माया फुटपाथ पर रो रही थी।

इस शहर में, जहाँ लोग वक्त की दौड़ में भागते हैं, जहाँ आँखें मोबाइल से ऊपर नहीं उठतीं — वहाँ अगर एक अजीत जैसा इंसान बचा है, तो उम्मीद ज़िंदा है।
यहाँ इस कहानी का अंत नहीं है। क्योंकि यह कहानी सिर्फ माया की नहीं, हम सबकी है।
हर दिन कोई न कोई माया खो जाती है —
कभी सच में, कभी भावनाओं में, कभी भीड़ में।
और हर दिन हमारा सामना होता है —
किसी की बेबसी से, किसी की चीख से, किसी की रोती हुई आँखों से।
सवाल है —
क्या हम कैमरा उठाएँगे या हाथ?
अजीत हैरान रह गया। उसने सोचा – "कैसी दुनिया है... मदद करने से पहले वीडियो पोस्ट करना ज़रूरी है?"
माया को देखकर अजीत का दिल भर आया। वह सोचने लगा – "कभी तो लोग गिरते हुए का हाथ पकड़ते थे, अब कैमरा पकड़ते हैं।"
आख़िरकार, स्टेशन पुलिस ने वीडियो देखकर माया को ढूँढा और माया की माँ को लेकर अजीत की चाय की दुकान पहुँचे।माँ ने माया को कसकर गले लगाया। दोनों रो पड़ीं।
अजीत भी चुपचाप खड़ा रहा।
माँ ने अजीत के पैर छुए – "भगवान भला करे आपका..."
अजीत ने कहा, "मैंने कुछ नहीं किया। बस मैं तो एक इंसान बना रहा।"
माया को माँ मिल गयी , पर उस दिन अजीत की आँखें कुछ और भी देख चुकी थीं:
• एक बच्ची का गुम हो जाना।
• भीड़ का तमाशाई बन जाना ।
• मदद करने की बजाय वीडियो बनाना।
• और फिर "वायरल" कर देना...
उसे लगा जैसे शहर में इंसान नहीं, वीउज और लाइक्स रहते हैं।
उस रात अजीत ने दुकान बंद करने से पहले दुकान के बाहर एक तख्ती टाँगी –
"यहाँ पर पहले इंसान हैं, फिर ग्राहक।"
कुछ दिन बाद माया स्कूल जाने लगी थी। हर शनिवार वो अपनी माँ के साथ अजीत की दुकान पर आती, चाय के लिए नहीं — उसके बगल में बैठकर किताबें पढ़ने।
अजीत ने दुकान के कोने में एक "छोटा पुस्तकालय" बना दिया था – बच्चों के लिए।
उस पर लिखा था –
"जहाँ संवेदना बसती हो, वहीं सच्चा शहर होता है।"

सच में मानवता कहीं खोती जा रही है,
पर जब तक एक भी दिल संवेदनशील है,
उसके फिर से लौटने की उम्मीद भी जिंदा हो सकती है।

निशीत कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय देहरादून

वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार द्वारा 12-13 जून 2025 को उत्तराखंड के मसूरी में दो दिवसीय संगोष्ठी सह समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें वर्ष 2024-25 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य के लिए यूको बैंक को वित्तीय सेवाएँ विभाग के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन बैंकों में "ग" क्षेत्र में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। इस दौरान यूको बैंक द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इस शुभ अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते समय उच्चअधिकारियों और राजभाषा प्रदर्शनी की तस्वीरें।

कार्तिक स्वामी मंदिर: आस्था और रोमांच का संगम

कार्तिक स्वामी मंदिर: आस्था और रोमांच का संगम

उत्तराखंड की दिव्य भूमि, जहां कण-कण में देवत्व का वास है, वहीं एक ऐसा पवित्र धाम भी है जहां की यात्रा न केवल आध्यात्मिक शांति देती है, बल्कि रोमांच से भी भर देती है। यह धाम है कार्तिक स्वामी मंदिर, जो भगवान शिव और देवी पार्वती के ज्येष्ठ पुत्र, कार्तिकेय को समर्पित है। समुद्र तल से लगभग 3048 मीटर (10,000 फीट) की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर रुद्रप्रयाग जिले के कनक चौरी गाँव के पास, क्रौंच पर्वत की चोटी पर विराजमान है। यह उत्तराखंड में एकमात्र कार्तिकेय मंदिर है।

यात्रा की शुरुआत: कनक चौरी से पैदल पथ

कार्तिक स्वामी मंदिर तक पहुंचने के लिए सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन ऋषिकेश लगभग 175किलोमीटर तथा सबसे नजदीकी हवाई अड्डा जॉली ग्रांट देहरादून लगभग 230 किलोमीटर दूर है। ऋषिकेश से रुद्रप्रयाग तक बस या जीप से आसानी से पहुँच सकते हैं।

रुद्रप्रयाग से, आपको कनक चौरी के लिए जीप और बसें मिल जाएँगी। आपको सड़क मार्ग से सबसे पहले रुद्रप्रयाग पहुँचना होगा और रुद्रप्रयाग से लगभग 38 किलोमीटर दूर स्थित कनक चौरी गाँव तक सड़क मार्ग से जाना पड़ता है। कनक चौरी एक छोटा सा, शांत गाँव है, कनक चौरी गाँव वह स्थान है जहाँ सड़क समाप्त हो जाती है वहां से मंदिर तक की 3 किलोमीटर की पैदल यात्रा एवं लगभग 80 सीढ़ियाँ चढ़नी होती है।यह चढ़ाई ओक और बुरांस के घने जंगलों से होकर गुजरती है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता से मन मोह लेती है। यह ट्रेक मध्यम कठिनाई का है और इसमें लगभग 1.5 से 2 घंटे लगते हैं, जो आपकी गति और शारीरिक क्षमता पर निर्भर करता है। मार्ग पत्थरों से बना है। ट्रेक के दौरान आपको कई चाय-नाश्ते की छोटी छोटी दुकानें मिलेंगी, जहाँ आप रुक कर आराम कर सकते हैं ।

जहां तक ठहरने की बात है तो रुद्रप्रयाग में होटल एवं गेस्टहाउस उपलब्ध हैं तथा कनकचौरी गाँव में भी होमस्टे की सुविधा उबलब्ध है। यात्रा के लिए स्थानीय ग्रामीणों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है अन्य भारतीयों से ₹25और विदेशी पर्यटकों ₹50 शुल्क लिया जाता है।

प्रकृति का अनुपम सौंदर्य

जैसे-जैसे आप ऊपर की ओर बढ़ते हैं, हिमालय की चोटियों के विहंगम दृश्य आपको मंत्रमुग्ध कर देते हैं। चौखंबा, नंदा देवी, त्रिशूल और बंदरपूंछ जैसी प्रसिद्ध चोटियाँ बादलों के बीच से झाँकती हुई दिखाई देती हैं, मानो वे आपका स्वागत कर रही हों। सुबह के समय जब सूरज की किरणें इन चोटियों पर पड़ती हैं, तो उनका सुनहरा रूप एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है। रास्ते में, आपको विभिन्न प्रकार के पक्षी और वनस्पतियाँ देखने को मिलेंगी, जो इस यात्रा को और भी आनंदमय बना देती हैं। आसपास का क्षेत्र जैव विविधता से भरपूर है। यहाँ विभिन्न प्रकार के पक्षी, जंगली फूल और औषधीय पौधे पाए जाते हैं। जो लोग प्रकृति फोटोग्राफी या बर्ड वाचिंग में रुचि रखते हैं, उनके लिए यह स्थान स्वर्ग से कम नहीं है। कार्तिक स्वामी की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय गर्मी (अप्रैल से जून) और शरद ऋतु (सितंबर से नवंबर) है। इन महीनों में मौसम सुहावना होता है और आसमान साफ होता है, जिससे हिमालय के दृश्य स्पष्ट दिखाई देते हैं। जून माह की कलश यात्रा जहां भक्तों को आकर्षित करती है वहीं कार्तिक पूर्णिमा (अक्तूबर-नवंबर) पर यहाँ होने वाली विशेष पूजा एवं महाभंडारा श्रद्धालुओं के लिए एक खास पर्व है।

मंदिर का इतिहास और पौराणिक महत्व

कार्तिक स्वामी मंदिर का अपना एक गहरा पौराणिक महत्व है। मान्यता है कि जब भगवान शिव ने अपने दोनों पुत्रों, गणेश और कार्तिकेय को पृथ्वी की परिक्रमा करने को कहा, तो गणेश ने अपने माता-पिता की परिक्रमा करके यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए उनके माता-पिता ही पूरी दुनिया हैं। जबकि कार्तिकेय पूरे ब्रह्मांड की परिक्रमा करने निकल पड़े। जब वे वापस आए, तो उन्हें पता चला कि गणेश ने पहले ही यह कार्य पूरा कर लिया है। इस बात से रुष्ट होकर, कार्तिकेय ने अपने शरीर की हड्डियाँ यहीं पर छोड़ दीं और दक्षिण भारत चले गए। तभी से इस स्थान को कार्तिकेय का निवास स्थान माना जाता है, और यहाँ उनकी हड्डियों की पूजा की जाती है।

मंदिर में अनुभव

मंदिर परिसर में पहुँचते ही एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है। यहाँ एक छोटी सी, साधारण मूर्ति है, जिसे लोग भगवान कार्तिकेय की हड्डी मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं। मंदिर में लगी सैंकड़ों घंटियों की मधुर ध्वनि और भक्तों के जयकारे वातावरण को और भी भक्तिमय बना देते हैं। शाम के समय यहाँ होने वाली आरती का दृश्य बेहद ही मनमोहक होता है, जब ढलते सूरज की रोशनी में मंदिर और आसपास का परिदृश्य सुनहरे रंग में रंग जाता है।

कार्तिक स्वामी मंदिर की यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के करीब जाने और हिमालय की भव्यता को महसूस करने का भी एक अद्भुत अवसर है। यह उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है जो शांति, आध्यात्मिकता और रोमांच का एक अनूठा संगम चाहते हैं। इस यात्रा के बाद आप न केवल एक आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठेंगे, बल्कि अपने साथ हिमालय की अविस्मरणीय यादें भी ले जाएंगे।

शुभम नेगी
सहायक प्रबंधक
गोविंदपुरी शाखा

यूको बैंक द्वारा उत्तराखंड सरकार के साथ सैलेरी पैकेज एमओयू पर हस्ताक्षर की तस्वीरें। इस शुभ अवसर पर यूको बैंक प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक संसाधन विभाग, श्री अमित श्रीवास्तव और उत्तराखंड सरकार की ओर से निदेशक श्रीमती अमिता जोशी एवं अपर निदेशक गुलफाम अहमद के साथ अंचल कार्यालय से अंचल प्रमुख श्री रणधीर कुमार एवं संसाधन विभाग प्रभारी श्रीमती तृप्ति कुमारी उपस्थित थी।

कासा, एम.एस.एम.ई. एवं कृषि कार्निवल

प्रधान कार्यालय के दिशा निर्देशानुसार पखवाड़े के आधार पर प्रधान कार्यालय से हमारे अंचल कार्यालय के मेंटर यहाँ का दौरा करते हैं और अलग अलग स्थानों पर अंचल कार्यालय की टीम के साथ ग्राहकों से भेंट करते हैं, ग्राहक बैठक में भाग लेते हैं। बैंक के अनेकों उत्पादों की जानकारी ग्राहकों को प्रदान की जाती है। नए ग्राहकों को बैंक के साथ जोड़ने का कार्य किया जाता है। परिणाम स्वरूप अंचल कार्यालय अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है।

इसी कार्निवल के दौरान अंचल कार्यालय में आयोजित सम्मानित ग्राहकों की बैठक की कुछ तस्वीरें।

दिनांक 16.06.2025 को माननीय संसदीय समिति की तीसरी उप समिति द्वारा यूको बैंक अंचल कार्यालय देहरादून का निरीक्षण किया गया और राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए "उत्कृष्ट" प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

देवभूमि का खेल महाकुंभ: 38वें राष्ट्रीय खेल – एक स्वर्णिम अध्याय

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड, जिसे हम 'देवभूमि' के नाम से जानते हैं, ने वर्ष 2025 की शुरुआत में एक ऐसा इतिहास रचा जिसने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। 28 जनवरी से 14 फरवरी, 2025 तक आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेलों ने न केवल खेल जगत में राज्य की धमक पैदा की, बल्कि उत्तराखंड की सांस्कृतिक और ढांचागत प्रगति को भी एक नई दिशा दी। अपनी स्थापना के रजत जयंती वर्ष (25वें वर्ष) में उत्तराखंड का इस भव्य आयोजन की मेजबानी करना, राज्य के लिए किसी गौरव से कम नहीं था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 जनवरी, 2025 को देहरादून के भव्य राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में इन खेलों का औपचारिक उद्घाटन किया। 'संकल्प से शिखर तक' के मोटो के साथ शुरू हुए इस महाकुंभ का समापन 14 फरवरी को हल्द्वानी में हुआ।इन 17 दिनों के दौरान, पूरा उत्तराखंड खेल के रंग में रंगा नजर आया। राज्य के 11 शहरों (देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, हल्द्वानी, रुद्रपुर, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और टिहरी आदि) में कुल 38 खेल विधाओं की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

'मौली' और 'तेजस्विनी': पहचान और प्रतीक

किसी भी बड़े खेल आयोजन की आत्मा उसके प्रतीकों में बसती है। 38वें राष्ट्रीय खेलों का शुभंकर (Mascot) 'मौली' था, जो उत्तराखंड के राज्य पक्षी 'हिमालयन मोनाल' से प्रेरित था। यह पक्षी अपनी रंगीन खूबसूरती और ऊंचाइयों पर उड़ने की क्षमता के लिए जाना जाता है, जो खिलाड़ियों के साहस का प्रतीक बना। वहीं, खेलों की मशाल का नाम 'तेजस्विनी' रखा गया, जिसने पूरे प्रदेश में भ्रमण कर एकता और खेल भावना की अलख जगाई। आयोजनों के लिए एक समर्पित मोबाइल ऐप बनाया गया था, जिसके माध्यम से लाइव स्कोरिंग, वेन्यू की लोकेशन और राज्य के पर्यटन स्थलों की जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध थी।

खेल गान (Anthem): "लक्ष्य"

इस गीत को उत्तराखंड की संस्कृति और आधुनिक ऊर्जा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। इसका सारांश कुछ इस प्रकार हैं।

"हिमालय की चोटी से, हमने एक संकल्प लिया है, देवभूमि की माटी ने, हर खिलाड़ी को आशीष दिया है। गंगा की लहरों सा वेग हो, नंदा सी अडिग शक्ति हो, हर रग में जोश भरा हो, खेल ही हमारी भक्ति हो।"

"लक्ष्य हमारा शिखर है, जीत ही हमारी पहचान, गूंज रहा है अंबर में, उत्तराखंड का ये गान।"

इस गीत (Anthem) की विशेषताएं:सांस्कृतिक वाद्ययंत्रों का संगम: इस गीत के संगीत में उत्तराखंड के पारंपरिक वाद्ययंत्रों जैसे ढोल-दमोऊ, हुड़का और रणसिंघा का बेहतरीन उपयोग किया गया, जिसे सुनकर ही खिलाड़ियों में जोश भर जाता था।इसके गीत के बोल बेहद प्रेरणादायी रहे। बोलों में उत्तराखंड के वीर सपूतों और हिमालय की कठोरता व सुंदरता का जिक्र किया गया, जो किसी भी एथलीट को अपनी सीमाओं से आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। यह गान न केवल उत्तराखंड बल्कि पूरे भारत के खिलाड़ियों को "वसुधैव कुटुंबकम" और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की भावना से जोड़ता था।

खेलों में परंपरागत और आधुनिकता का मिलन

इस बार राष्ट्रीय खेलों में आधुनिक खेलों के साथ-साथ भारत की पारंपरिक खेल कलाओं को भी विशेष स्थान दिया गया। कुल 38 खेलों में से कुछ प्रमुख इस प्रकार थे। **आधुनिक खेल:** एथलेटिक्स, तैराकी, निशानेबाजी, बैडमिंटन, फुटबॉल, मुक्केबाजी और वेलोड्रोम (साइकिलिंग)। महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज रायपुर में एथलेटिक्स, फुटबॉल और जूडो की प्रतियोगिताएं हुईं। विशेष रूप से निर्मित साइकिलिंग वेलोड्रोम भारत के सबसे आधुनिक वेलोड्रोम्स में से एक बनकर उभरा।परेड ग्राउंड और इंडोर हॉल में बैडमिंटन, टेबल टेनिस और बास्केटबॉल के रोमांचक मुकाबले हुए।**पारंपरिक और प्रदर्शन खेल:** मल्लखंब, योगासन, कलारीपयट्टू और राफ्टिंग। वॉटर स्पोर्ट्स: उत्तराखंड की नदियों और झीलों का लाभ उठाते हुए टिहरी और गुलरभोज में नौकायन (Canoeing & Kayaking) जैसी प्रतियोगिताएं आकर्षण का केंद्र रहीं। टिहरी की विशाल झील में क्याकिंग और कैनोइंग जैसी प्रतियोगिताओं ने पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे जल क्रीड़ाओं (Water Sports) के क्षेत्र में राज्य की संभावनाओं को नई उड़ान मिली।

'ग्रीन गेम्स' और पर्यावरण संरक्षण की पहल

देवभूमि होने के नाते उत्तराखंड ने इन खेलों में "ज़ीरो वेस्ट" की अवधारणा को अपनाया गया था। ई-कचरे से पदक बनाए गए, यह पहली बार था जब खराब हो चुके इलेक्ट्रॉनिक सामान को बदल कर विजेताओं के लिए पदक तैयार किए गए। यह सतत विकास का एक बड़ा उदाहरण था। आयोजन को अधिक से अधिक प्लास्टिक मुक्त बनाने के प्रयास किए गए, खिलाड़ियों के लिए बांस की बोतलों और पर्यावरण अनुकूल सामग्री का उपयोग किया गया। प्रत्येक स्वर्ण पदक

विजेता के नाम पर उत्तराखंड के पहाड़ों में एक पौधा रोपा गया, जिसे 'राष्ट्रीय खेल स्मृति वन' का नाम दिया गया।

उत्तराखंड को मेजबानी से हुए लाभ

यह आयोजन केवल पदकों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने राज्य के सर्वांगीण विकास के द्वार खोल दिए ,खेलों के बहाने देहरादून में अंतरराष्ट्रीय स्तर का वेलोड्रोम, हल्द्वानी में खेल परिसर और कई अन्य शहरों में आधुनिक स्टेडियम व सिंथेटिक ट्रैक तैयार हुए। यह बुनियादी ढांचा भविष्य के स्थानीय एथलीटों के लिए वरदान साबित होगा।देशभर से आए 11,000 से अधिक खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और अधिकारियों ने उत्तराखंड के पर्यटन को वैश्विक मानचित्र पर नई पहचान दी। इससे 'स्पोर्ट्स टूरिज्म' की नई अवधारणा को मजबूती मिली।होटलों, परिवहन और स्थानीय हस्तशिल्प बाजार को इन खेलों से बड़ा व्यापार मिला। स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित हुए।उत्तराखंड ने इन खेलों को 'ग्रीन गेम्स' के रूप में आयोजित किया। ई-वेस्ट से बने पदक, रीसायकल सामग्री से बनी किट और प्लास्टिक मुक्त आयोजन ने पर्यावरण संरक्षण का बड़ा संदेश दिया। पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के नाम पर 'स्पोर्ट्स फॉरेस्ट' में रुद्राक्ष के पौधे रोपे गए।

उत्तराखंड को मेजबानी से हुए अन्य सूक्ष्म लाभ

सड़कों और कनेक्टिविटी का जाल बिछाया गया, खेल स्थलों तक पहुँचने के लिए चारधाम ऑल वेदर रोड के अलावा जिला मार्गों का चौड़ीकरण किया गया, जिसका लाभ अब आम जनता को मिल रहा है।स्वयंसेवकों (Volunteers) का कौशल विकसित हुआ, लगभग 5,000 स्थानीय युवाओं को मैनेजमेंट, हॉस्पिटैलिटी और प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण दिया गया। यह 'स्किल इंडिया' की दिशा में एक बड़ा कदम था। सांस्कृतिक लाभ भी हुआ,उद्घाटन और समापन समारोह में छोलिया नृत्य, जांगर और पांडव नृत्य का प्रदर्शन हुआ। इससे उत्तराखंड की लोक संस्कृति को करोड़ों लोगों ने लाइव देखा। खेलों के बाद टिहरी में 'वॉटर स्पोर्ट्स ट्रेनिंग सेंटर' को राष्ट्रीय अकादमी का दर्जा दिया गया। अब यहाँ के युवा केवल गाइड नहीं, बल्कि पेशेवर कोच बनेंगे। अत्याधुनिक खेल सुविधाओं का निर्माण किया गया उत्तराखंड ने इन खेलों के लिए न केवल पुराने स्टेडियमों का जीर्णोद्धार किया, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानकों के नए परिसर भी बनाए। देहरादून में महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज देश का एक बेहतरीन साइकिलिंग वेलोड्रोम और एथलेटिक्स ट्रैक तैयार किया गया। हल्द्वानी के गौलापार स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्विमिंग पूल और इंडोर हॉल बनाया गया, जो कुमाऊं क्षेत्र के लिए भविष्य की नर्सरी बनेगा। पिथौरागढ़ और नैनीताल में ऊँचाई वाले क्षेत्रों (High Altitude) में खेलों के आयोजन से खिलाड़ियों को विशेष अनुभव मिला, जो ओलंपिक जैसी बड़ी प्रतियोगिताओं की तैयारी में सहायक होता है।

उत्तराखंड का शानदार प्रदर्शन

मेजबान होने के नाते उत्तराखंड के खिलाड़ियों ने भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। राज्य ने कुल 103 पदक जीतकर इतिहास रचा, जिसमें 24 स्वर्ण पदक शामिल थे। पदक तालिका में राज्य ने 25वें स्थान से लंबी छलांग लगाकर टॉप 10 (7वें स्थान) में जगह बनाई। सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड (SSCB) ने सर्वाधिक स्वर्ण पदक जीतकर अपनी बादशाहत बरकरार रखी। उत्तराखंड का प्रदर्शन विशेषकर एथलेटिक्स, मुक्केबाजी और कराटे में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रहा।

भविष्य की पीढ़ी के लिए प्रेरणा

इन खेलों का सबसे बड़ा फायदा राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को हुआ। जब उन्होंने अपने सामने राष्ट्रीय स्तर के सितारों को खेलते देखा, तो खेलों के प्रति एक नई चेतना जागृत हुई। राज्य सरकार

ने इसी अवसर पर 'खेलो उत्तराखंड' योजना को और विस्तार देने की घोषणा की, ताकि गाँवों से प्रतिभाएं निकलकर 2028 और 2032 के ओलंपिक तक पहुँच सकें।38वें राष्ट्रीय खेलों की सफल मेजबानी ने यह सिद्ध कर दिया कि उत्तराखंड केवल तीर्थाटन का केंद्र ही नहीं, बल्कि खेल और आधुनिक आयोजनों का भी सशक्त गंतव्य है। इन खेलों ने राज्य के युवाओं में एक नया आत्मविश्वास भरा है। अब देवभूमि से निकलने वाले खिलाड़ी न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक के मंच पर भी तिरंगा लहराने के लिए तैयार हैं। यह आयोजन उत्तराखंड की प्रगति की यात्रा में एक स्वर्णिम मील का पत्थर साबित होगा।38वें राष्ट्रीय खेल केवल रिकॉर्ड तोड़ने या पदक जीतने का उत्सव नहीं था, बल्कि यह नए उत्तराखंड के आत्मविश्वास का प्रतिबिंब था।

भविष्य की कार्ययोजना: 'रिटेंशन पॉलिसी'

उत्तराखंड सरकार ने घोषणा की है कि इन खेलों के लिए बनाया गया सामान और बुनियादी ढांचा धूल नहीं फांकेगा। इसके लिए प्रत्येक वेन्यू को एक विशिष्ट खेल की अकादमी में बदला जा रहा है।रोजगार की गारंटी दी गई, पदक विजेता खिलाड़ियों के लिए राज्य सरकार की नौकरियों में 4% खेल कोटा कड़ाई से लागू किया गया है। उत्तराखंड अब 2030 तक एशियाई खेलों (Asian Games) के कुछ इवेंट्स की मेजबानी करने का लक्ष्य रख रहा है।

अदृश्य हाथ:

जब हम पदक और तालियों की गूंज सुनते हैं, तो अक्सर उन हाथों को भूल जाते हैं जिन्होंने इस पूरे आयोजन की नींव को थामे रखा था। 38वें राष्ट्रीय खेलों की सफलता के पीछे उत्तराखंड शासन, पुलिस और प्रशासन का वह 'ब्लूप्रिंट' था, जिसने शून्य त्रुटि (Zero Error) के साथ इस महाकुंभ को संपन्न कराया।

त्रि-स्तरीय सुरक्षा घेरा (Triple-Layer Security) स्थापित किया गया। उत्तराखंड एक सीमांत राज्य है, जिसकी सीमाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संवेदनशील हैं। ऐसे में सुरक्षा सर्वोपरि थी:**इंटेलिजेंस विंग:** खेलों से दो महीने पहले ही राज्य की खुफिया इकाई और केंद्रीय एजेंसियां सक्रिय हो गई थीं। चप्पे-चप्पे पर सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन के जरिए निगरानी रखी गई।**विशेष बल:** 'एलीट कमांडो' और उत्तराखंड पुलिस के जवानों को सभी 11 जिलों के वेन्यू पर तैनात किया गया था। स्टेडियम के भीतर और बाहर खिलाड़ियों की सुरक्षा के लिए 'ग्रीन कॉरिडोर' बनाए गए थे।**भीड़ प्रबंधन:** देहरादून और हरिद्वार जैसे भीड़भाड़ वाले शहरों में ट्रैफिक को 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम से नियंत्रित किया गया, ताकि आम जनता को असुविधा न हो।

किसी भी खेल महाकुंभ की सफलता केवल अत्याधुनिक स्टेडियमों या बड़े बजट से तय नहीं होती, बल्कि उन चेहरों से होती है जो हर मोड़ पर मुस्कुराते हुए मदद के लिए तैयार रहते हैं। 38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड के लगभग 5,000 युवाओं ने 'स्वयंसेवक' के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। इनमें छात्र, एनसीसी (NCC) कैडेट, एनएसएस (NSS) के सदस्य और स्थानीय पेशेवर शामिल थे।

विरासत और विश्वास का संगम

38वें राष्ट्रीय खेलों का समापन केवल एक आयोजन की समाप्ति नहीं थी, बल्कि यह हिमालय की चोटियों से गूंजता हुआ एक ऐसा शंखनाद था, जिसने पूरी दुनिया को बता दिया कि 'उगता हुआ उत्तराखंड' अब रुकने वाला नहीं है। 17 दिनों के इस महाकुंभ ने यह सिद्ध कर दिया कि जब अडिग संकल्प और पहाड़ जैसा हौसला एक साथ मिलते हैं, तो इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षर खुद-ब-खुद लिखे जाते हैं। इन खेलों ने हमें केवल पदक नहीं दिए, बल्कि हमें एक 'विरासत' दी है। वे स्टेडियम, वे ट्रैक और वे खेल परिसर अब केवल कंक्रीट के ढांचे नहीं हैं,

बल्कि उन हजारों युवाओं के सपनों की नर्सरी हैं, जो अब अपनी आँखों में ओलंपिक के सपने सजा रहे हैं। उत्तराखंड ने यह साबित किया कि वह केवल 'आध्यात्मिक शांति' का केंद्र ही नहीं, बल्कि 'शारीरिक शौर्य' का भी सबसे बड़ा अखाड़ा है।संकल्प से सिद्धि की ओर प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के सपने में उत्तराखंड के इन खेलों ने एक सशक्त अध्याय जोड़ा है। 'मौली' की उड़ान ने हमें सिखाया कि ऊँचाइयों से डरना नहीं, बल्कि उन्हें छूना ही हमारा स्वभाव है। 'तेजस्विनी' की मशाल भले ही अब शांत हो गई हो, लेकिन उसकी लौ हर उत्तराखंडी युवा के मन में 'खेल संस्कृति' की मशाल जला चुकी है।भविष्य की पुकार आज जब हम इस आयोजन को मुड़कर देखते हैं, तो हमें गर्व होता है कि हमने न केवल देश के श्रेष्ठ एथलीटों का स्वागत किया, बल्कि उन्हें देवभूमि की उस मिट्टी का स्पर्श भी दिया जो वीरों को जन्म देती है। उत्तराखंड अब 'स्पोर्ट्स टूरिज्म' और 'हाई एल्टीट्यूड ट्रेनिंग' का ग्लोबल हब बनने की राह पर अग्रसर है।

"गूँज उठा है फिर से जयघोष, देवभूमि का बढ़ा है मान,
खेलों के इस महाकुंभ से, चमक उठा है मेरा उत्तराखंड महान।"

अंकुर सिंह राणा
प्रबंधक
ऋषिकेश शाखा

हमारे अंचल के मेंटर, महाप्रबंधक कारोबार विकास नई दिल्ली, श्री अंबिकानंद झा जी समय समय पर अंचल कार्यालय का दौरा करते हैं। इस दौरान व्यवसाय वृद्धि हेतु अलग अलग ग्राहकों के साथ भेंट करते हैं तथा साथ ही शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता भी करते हैं किंतु दिनांक 06.08.2026 को खास तौर से उप शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। उप शाखा प्रमुख बैठक की कुछ तस्वीरें।

दूसरी तिमाही तक बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

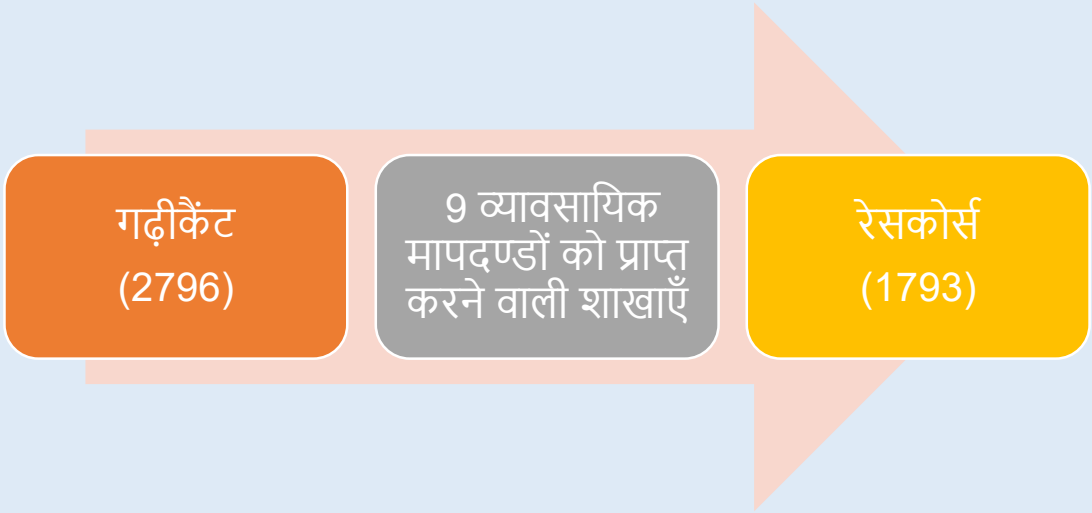

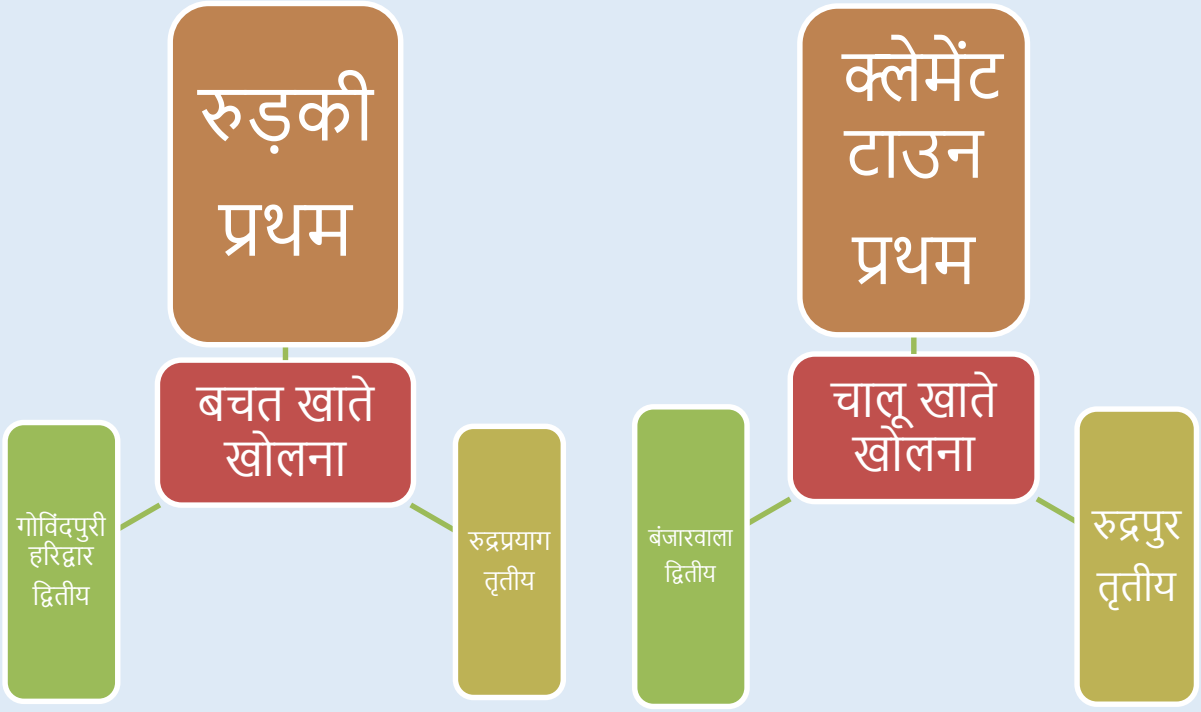

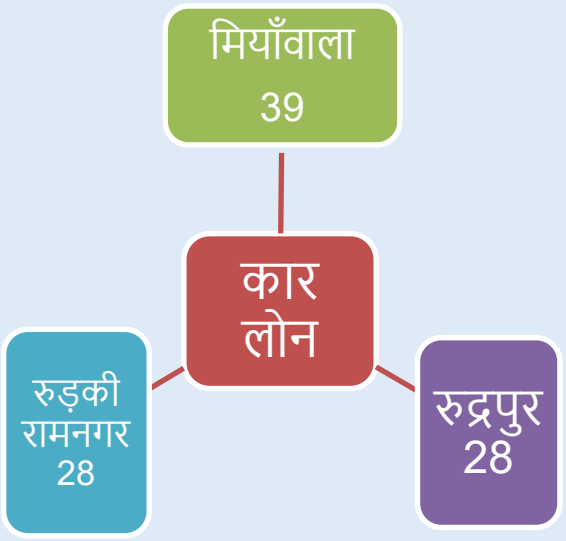
मियाँवाला
39
कार
लोन
रुड़की
रामनगर
28
रुद्रपुर
28

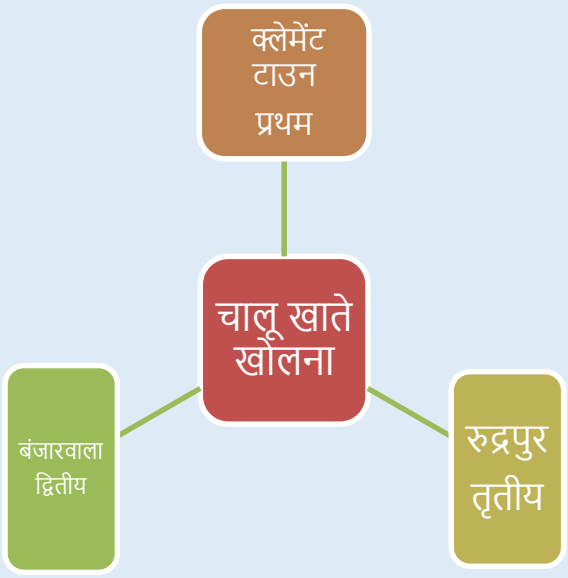
क्लेमेंट
टाउन
प्रथम
चालू खाते
खोलना
बंजारवाला
द्वितीय
रुद्रपुर
तृतीय

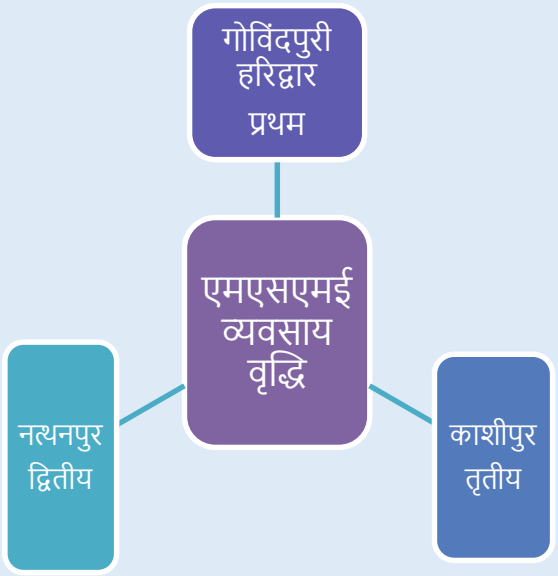
गोविंदपुरी
हरिद्वार
प्रथम
एमएसएमई
व्यवसाय
वृद्धि
नत्थनपुर
द्वितीय
काशीपुर
तृतीय

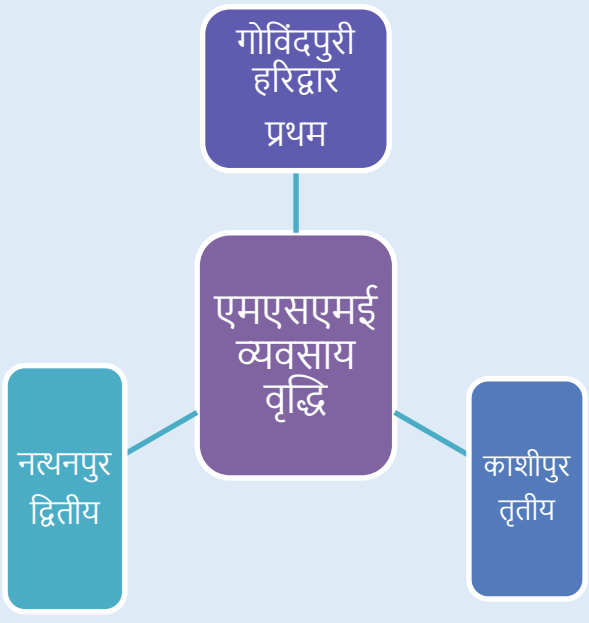
गोविंदपुरी
हरिद्वार
प्रथम
एमएसएमई
व्यवसाय
वृद्धि
नत्थनपुर
द्वितीय
काशीपुर
तृतीय

प्रधान कार्यालय द्वारा समय समय पर अंचल कार्यालय के कार्यों की समीक्षा की जाती है और उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु अंचलों को सम्मानित भी किया जाता है। इसी क्रम में अंचल प्रमुख समीक्षा बैठक में अंचल कार्यालय देहरादून को जून तिमाही में फ्रेश स्लिप्पेज को रोकने के लिए प्रथम,डिजिटल ऑनबोर्डिंग के लिए तथा बचत खाते में जमा शेष वृद्धि के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार प्राप्त करते हुए अंचल प्रमुख श्री रणधीर कुमार जी एवं इस खुशी को साझा करती देहरादून अंचल की टीम की तस्वीरें।

“वक़्त की ख़ामोशी”

हमने देखा है उन गलों को भी गूँगे होते हुए,
जो कभी गर्व से बहुत गुर्राया करते थे।
जो लफ़्ज़ों से आग बरसाते थे कभी,
वक़्त के थपेड़ों से बहरे-सुनसान हो गए।

वो आँखें जो आसमान को नीचा समझती थीं,
अब टिकी रहती हैं ज़मीन पर— थकी-सी, नम।
जो चेहरे पे इतराते थे, लड़ा करते थे आईनों से
अब खुद की परछाई तक से डरते हुए बमुश्किल चलते हैं
चंद कदम।

वो हाथ जो दावा करते थे कभी
दूसरों की तक़दीरें लिखने का,
आज दुआओं में उठते हैं — कांपते हुए , चुपचाप।
वो जुबां जो सच की परछाईं से भी भागती थी,
अब झूठ को भी निगल नहीं पाती बिना कसक के।

हमने देखा है हाकिमों को हथेलियाँ फैलाते हुए,
अब तलाश में हैं खुद की वो,
जो हँसते थे दूसरों के हालात पर ।
वो मेहराबें जिनमें कभी आदमीयत बसती थी,
अब तब्दील हैं खंडहरों में - सन्नाटा है, मौन है, पश्चाताप है।

समय के पास राजा होने का कोई ताज नहीं होता,
पर काफ़ी है, आवाज़ ही उसके कदमों की ।
जो गुर्राते थे, गरजते थे, गड़गड़ाते थे,
वही अब अपनी पहचान के लिए गिड़गिड़ाते हैं।

क्योंकि सच तो यह है —
वक़्त हमेशा के लिए किसी का नहीं होता,
और घमंड की भाषा वक़्त कभी नहीं समझता।

नरिंदर बंगा
वरिष्ठ प्रबंधक

आँवला रसम बनाने की विधि

कुछ ही दिनों में पहाड़ो में ठंड का मौसम शुरू होने वाला है और ऐसे ठंडे मौसम में सर्दी लग जाना, नाक बहना, बुखार, भूख न लगना, गले में दर्द ये सब आम परेशानियाँ होती हैं। सर्दियों में इम्यूनिटी बढ़ाने और इस बीमारियों से निजात पाने और गले को राहत देने के लिए आंवला रसम एक बेहतरीन रेसिपी है है। यह बनाने में बहुत आसान है और इसका स्वाद खट्टा-तीखा होता है जो सर्दी-जुकाम में बहुत फायदेमंद है।

सामग्री

- ✓ आंवला: 3-4 मध्यम आकार के (उबले हुए)
- ✓ टमाटर : 2 माध्यम आकार के
- ✓ काली मिर्च : 1 छोटा चम्मच (सर्दियों के लिए बहुत जरूरी)
- ✓ जीरा : 1 छोटा चम्मच
- ✓ लहसुन : 3-4 कलियां (यदि आप खाते हों)
- ✓ अदरक: 2 इंच का एक टुकड़ा
- ✓ हरी मिर्च: 1 (स्वादानुसार)
- ✓ पानी: 2 से 3 कप
- ✓ हल्दी पाउडर: ¼ छोटा चम्मच
- ✓ नमक: स्वादानुसार
- ✓ गुड़ : 1 छोटा टुकड़ा
- ✓ धनिया पत्ती: बारीक कटी हुई (सजावट के लिए)
- ✓ उबली हुई अरहर/तूहर दाल: 2 बड़े चम्मच
- ✓ घी 1 बड़ा चम्मच
- ✓ राई: ½ छोटा चम्मच
- ✓ सूखी लाल मिर्च: 1-2
- ✓ कढ़ी पत्ता: 8-10
- ✓ हींग: 1 चुटकी

बनाने की विधि

सबसे पहले आंवलों को धो लें और टमाटर को धो कर बीच से काट लें। अब इन दोनों को कुकर में थोड़ा हल्दी पाउडर, चुटकी भर नमक एवं पानी डालकर 1-2 सीटी आने तक उबाल लें (या पतीले में नरम होने तक उबालें) । इसके अलावा अरहर की दाल को भी अलग से उबाल लें।
उबलने के बाद आंवले के बीज तथा टमाटर के छिलके निकाल दें और गूदे को मैश कर लें या मिक्सी में थोड़ा पानी डालकर दरदरा पीस लें।

मिक्सी के छोटे जार में काली मिर्च, जीरा, लहसुन,अदरक और हरी मिर्च को दरदरा कूट लें। इस पेस्ट को ताज़ा ही कूट लें,ताज़ा कूटने से खुशबू और असर दोनों अच्छा रहता है।

एक बर्तन में आंवले का पेस्ट/पानी डालें। इसमें 2-3 कप एक्स्ट्रा पानी मिलाएं।अब इसमें कूटा हुआ मसाला (काली मिर्च-जीरा-लहसुन), हल्दी, नमक और गुड़ डाल दें।उबली हुई दाल को भी मैश करके मिला दें।
इसे मध्यम आंच पर 5-7 मिनट तक अच्छे से उबलने दें ताकि मसालों का कच्चापन निकल जाए और रसम से अच्छी खुशबू आने लगे।अंत में बारीक कटी धनिया पत्ती डालें और आंच बंद कर दें।

इसके पश्चात तड़के की तैयारी करें। एक तड़का पैन में घी गरम करें।इसमें राई डालें, जब राई चटकने लगे तो सूखी लाल मिर्च, हींग और कढ़ी पत्ता डालें।इस गरमा-गरम तड़के को तैयार रसम के ऊपर डालें और तुरंत ढक्कन लगा दें ताकि खुशबू अंदर अच्छे से समा जाए।

इसे आप गरमा-गरम सूप की तरह पी सकते हैं या गर्मा-गरम भात के साथ खा सकते हैं। एक बार इस विधि से आँवला रसम जरूर बना कर देखें और विश्वास रखिए आप का पेट इसे खाकर भर जाएगा पर आप इसे और ज्यादा खाना चाहेंगे।

ममता बिष्ट
एचकेपी, अंचल कार्यालय देहरादून

भारत सरकार, राजभाषा विभाग एवं प्रधान कार्यालय से प्राप्त निदेशानुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कार्यालय प्रमुख की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए और नराकास की बैठकों का आयोजन छमाही आधार पर किया जाना आवश्यक है। इसी क्रम में दिनांक 27.05.2025 को नराकास बैंक एवं बीमा देहरादून की बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में अंचल प्रमुख श्री रणधीर कुमार ने भाग लिया। इस बैठक में यूको बैंक के अधिकारी श्री शुभम नेगी को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। नराकास की बैठक की कुछ तस्वीरें।

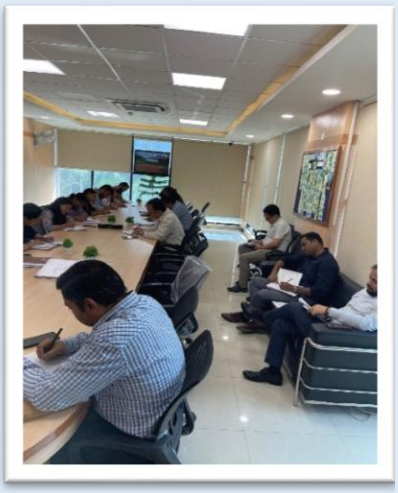
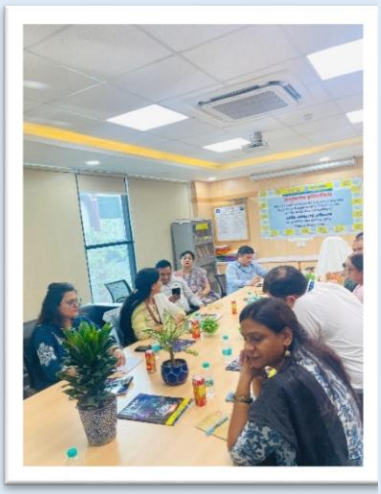
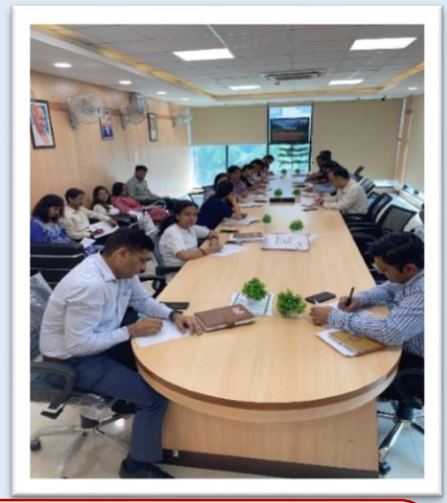

यूको बैंक अंचल कार्यालय में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया और विभिन्न प्रतियोगताओं का भी आयोजन किया गया। इस दौरान नराकास देहरादून के तत्वाधान में आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर प्रतियोगिता आयोजन की कुछ तस्वीरें।

प्रधान कार्यालय एवं भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अनुपालन हेतु अंचल कार्यालय देहरादून की शाखाओं ने अलग अलग स्थानों पर री-केवाईसी, केवाईसी, जनसुरक्षा योजनाओं के बारे में जागरूकता शिविर आयोजित किए। इसी क्रम में दिनांक 19 सितंबर 2025 को भारतीय रिजर्व बैंक के तत्वाधान में खंड विकास कार्यालय सहसपुर में एक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय रिजर्व बैंक से क्षेत्रीय निदेशक श्री अरविंद कुमार जी ने स्वयं भाग लिया।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस वर्ष यह सम्मेलन गुजरात के गांधीनगर में आयोजित किया गया। प्रधान कार्यालय से मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश नागर जी एवं राजभाषा विभाग की टीम ने इस सम्मेलन में भाग लिया और विभिन्न अंचल कार्यालयों से राजभाषा अधिकारियों ने भी भाग लिया। यूको बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से भी नवाजा गया। यूको बैंक के स्टॉल पर डिजिटल रूप से राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसके विजेताओं को मुख्य महाप्रबंधक महोदय द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। इस खास अवसर पर खींची गई कुछ तस्वीरें।

KYC अपडेट कराएँ
बैंक खाते को सक्रिय बनाए रखें।
अपने नज़दीकी
ग्राम पंचायत के कैंप में जाएँ
1 जुलाई से
30 सितम्बर 2025 तक
KYC अपडेट करने के लिए आवश्यक दस्तावेज़
• अगर नाम या पता नहीं बदला है – स्व-घोषणा पर्याप्त है।
• अगर नाम या पता बदला है –
अपडेटेड जानकारी वाला कोई एक दस्तावेज़:
आधार / मतदाता पहचान पत्र / NREGA जॉब कार्ड /
ड्राइविंग लाइसेंस / पासपोर्ट /
नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर द्वारा जारी पत्र
अपने बैंक की नज़दीकी शाखा में जाकर भी
KYC अपडेट करा सकते हैं।
आरबीआई कहता है...
जानकार बनिए,
सतर्क रहिए!
जनहित में जारी
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF IN
www.rbi.org.in

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
क्या
आप
जानते हैं
एटीएम या दुकानों पर लगे नकली QR कोड
आपके पैसे ठगों के खाते में भेज सकते हैं।
QR कोड स्कैन करने से पहले दुकानदार की
पहचान जरूर जांचें और पैसे पाने के लिए
कभी भी QR कोड स्कैन न करें।
Report cybercrime at https://cybercrime.gov.in or Call 1930 for assistance.
यूको बैंक
UCO BANK
CISO OFFIC
Honours Your Trust